RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 322
दि. 26.03.2026, गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मिडिल ईस्ट में बढ़ा टकराव: ईरान ने अमेरिकी युद्धपोत को बनाया निशाना, डोनाल्ड ट्रंप की नरमी के बाद भी तेवर सख्त

तेहरान। पश्चिम एशिया एक बार फिर वैश्विक चिंता का केंद्र बनता जा रहा है, जहां ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ता तनाव अब खुले टकराव की दिशा में बढ़ता नजर आ रहा है। ताजा घटनाक्रम ने इस आशंका को और गहरा कर दिया है, जिसमें ईरान ने दावा किया है कि उसने अमेरिकी विमानवाहक पोत यूएसएस अब्राहम लिंकन पर क्रूज मिसाइलें दागीं। इस दावे ने न केवल सैन्य हलकों में हलचल मचा दी है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक गलियारों में भी चिंता की लहर दौड़ा दी है।

ईरानी नौसेना के अनुसार, यह कार्रवाई महज एक चेतावनी नहीं, बल्कि अपनी सामरिक क्षमता का प्रदर्शन भी है। सरकारी मीडिया के जरिए जारी बयान में कहा गया कि 'कादर' एंटी-शिप क्रूज मिसाइलों का उपयोग करते हुए अमेरिकी युद्धपोत को निशाना बनाया गया। ईरान का दावा है कि इस हमले के बाद अमेरिकी बेड़े को अपनी स्थिति और दिशा बदलने पर मजबूर होना पड़ा। हालांकि, इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि अभी तक किसी अंतरराष्ट्रीय स्रोत से नहीं हुई है, लेकिन इस तरह का बयान भी वैश्विक सुरक्षा के लिहाज से बेहद गंभीर माना जा रहा है।

ईरानी नौसेना प्रमुख एडमिरल शहरम ईरानी ने इस घटनाक्रम के बाद बेहद सख्त चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी कैरियर स्ट्राइक ग्रुप की हर गतिविधि पर उनकी नजर बनी हुई है और जैसे ही वह उनकी मिसाइल प्रणालियों की मारक क्षमता के भीतर आएगा, उस पर और भी घातक हमले किए जाएंगे। यह बयान इस बात का संकेत है कि ईरान अब केवल रक्षात्मक रणनीति तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर आक्रामक रुख अपनाने के लिए भी पूरी तरह तैयार है।

यह पूरा घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है, जब हाल ही में डोनाल्ड ट्रंप ने ईरानी बिजली संयंत्रों पर संभावित हमले के लिए दिए गए 48 घंटे के अल्टीमेटम को वापस ले लिया था। इसे अमेरिका की ओर से तनाव कम करने की कोशिश के

रूप में देखा गया था। लेकिन ईरान ने इस कदम को कमजोरी के रूप में पेश किया और इसे अपनी रणनीतिक जीत बताया। ईरान के 'खातम अल-अंबिया' मुख्यालय के प्रवक्ता इब्राहिम जोलफागरी ने कहा कि अमेरिका अब वह वैश्विक शक्ति नहीं रहा, जो पहले हुआ करता था, और उसकी सैन्य धमकियों का असर कम होता जा रहा है। ईरान का यह रुख केवल सैन्य बयानबाजी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कूटनीतिक संदेश भी छिपा हुआ है। तेहरान ने अमेरिका द्वारा किए जा रहे बातचीत के प्रस्तावों को सिरे से खारिज कर दिया है और उन्हें "दिखावा" करार दिया है। ईरानी अधिकारियों का आरोप है कि अमेरिका एक तरफ शांति वार्ता की बात करता है और दूसरी तरफ अपने युद्धपोतों और सैन्य ठिकानों के जरिए दबाव बनाने की रणनीति अपनाता है। ऐसे में ईरान अब इस दोहरे रवैये को स्वीकार करने के मूड में नहीं है।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा असर मिडिल ईस्ट की स्थिरता पर पड़ सकता है। यह क्षेत्र पहले ही कई संघर्षों, राजनीतिक अस्थिरता और सैन्य तनाव से जूझ रहा है। ऐसे में अगर ईरान और अमेरिका के बीच सीधा सैन्य टकराव होता है, तो इसका असर केवल इन दो देशों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में ले सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिकी विमानवाहक पोत जैसे यूएसएस अब्राहम लिंकन पर हमला या हमला करने का दावा भी एक गंभीर संकेत है। यह पोत केवल एक सैन्य जहाज नहीं, बल्कि अमेरिका की वैश्विक सैन्य ताकत और रणनीतिक उपस्थिति का प्रतीक है। ऐसे में इसे निशाना बनाना या उस पर हमला करने की बात कहना, सीधे-सीधे अमेरिका को चुनौती देने जैसा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी इसका गहरा असर पड़ सकता है। मिडिल ईस्ट दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादक क्षेत्रों में से एक है और यहां किसी भी तरह का सैन्य संघर्ष तेल की आपूर्ति को प्रभावित कर सकता है। इससे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में तेल की कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव आ सकता है, जिसका असर दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ेगा।

इस बीच, अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी स्थिति पर नजर बनाए हुए है। कई देश दोनों पक्षों से संयम बरतने और बातचीत के जरिए समाधान निकालने की अपील कर रहे हैं। लेकिन जिस तरह से दोनों देशों के बयान सामने आ रहे हैं, उससे फिलहाल तनाव कम होने के बजाय बढ़ता ही नजर आ रहा है।

अंततः, यह घटनाक्रम केवल एक सैन्य या राजनीतिक विवाद नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्थिरता के लिए एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। आने वाले दिनों में यह देखना बेहद महत्वपूर्ण होगा कि ईरान और अमेरिका अपने कदम किस दिशा में बढ़ाते हैं—क्या वे कूटनीति का रास्ता अपनाएंगे या फिर यह तनाव किसी बड़े संघर्ष में बदल जाएगा। फिलहाल, दुनिया की नजरें इसी सवाल पर टिकी हैं और हर नया घटनाक्रम इस कहानी को और अधिक जटिल बनाता जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मार्च-2026 के राज्य स्वागत कार्यक्रम में 'नागरिक देवो भव:' का उदारतम दृष्टिकोण अपनाया

राज्य स्वागत की फलश्रुति

- **किसानों को मिलेगा बेहतर खेती का आधार, भूमि अधिग्रहण मुआवजा**
- **विद्यार्थियों को मिलेगी स्कूल की पक्की छत, वृद्ध माता को मिला अपना घर**

- **जन समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए जिलों के प्रशासनिक तंत्र को स्पष्ट निर्देश**
- **मुख्यमंत्री के अध्यक्षता में आयोजित राज्य स्वागत कार्यक्रम में 100 से अधिक नागरिकों की समस्याओं का सुखद समाधान**

- जिला स्वागत में 1218 एवं तहसील स्वागत में 2294 सहित 3512 प्रस्तुतियों पर उचित कार्रवाई की गई
- वृद्ध माता की शिकायत पर मुख्यमंत्री ने संवेदना व्यक्त करते हुए वृद्धा को कोई परेशानी न हो, यह तत्काल सुनिश्चित करने के दिशानिर्देश दिए
- सरदार कृषि नगर यूनिवर्सिटी, दांतीवाड़ा में पिछले 40 वर्षों से चल रही प्राथमिक स्कूल में पढ़ रहे 300 बच्चों के हित में तुरंत स्कूल निर्माण का निर्देश
- खेत से गुजर रही भूमिगत सीवर लाइन के लीकेज से फसल को हो रहे नुकसान को रोकने, खेत का कटाव रोकने तथा खेत तक जाने के रास्ते से अतिक्रमण हटाने सहित किसानों की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए स्थानीय प्रशासन को तत्काल कार्रवाई करने के आदेश दिए गए

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को मार्च-2026 के राज्य स्वागत कार्यक्रम में प्राप्त प्रस्तुतियों को स्वयं सुनकर 'नागरिक देवो भवः' के उदार दृष्टिकोण के साथ जन समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए संबंधित जिलों के प्रशासनिक तंत्र को स्पष्ट निर्देश दिए।

स्वागत ऑनलाइन जन शिकायत निवारण पहल अंतर्गत मार्च-2026 के राज्य स्वागत में राज्यभर से 100 से अधिक आवेदक अपनी समस्याओं के साथ उपस्थित रहे। इसके अलावा, जिला स्वागत की 1218 और तहसील स्वागत की 2294 प्रस्तुतियों-प्रश्नों के संदर्भ में भी जिला एवं तहसील स्तर पर उचित समाधान की कार्रवाई की गई।

मुख्यमंत्री ने राज्य स्वागत कार्यक्रम में पुत्र एवं पुत्रवधू द्वारा वृद्ध माता को घर से निकालने तथा शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना देने की शिकायत पर संवेदना व्यक्त करते हुए तत्काल डिप्टी कलेक्टर के आदेश का पालन सुनिश्चित करने हेतु जिला कलेक्टर और जिला पुलिस अधीक्षक को निर्देश दिए।

सरदार कृषि नगर यूनिवर्सिटी, दांतीवाड़ा में पिछले 40 वर्षों से चल रही प्राथमिक स्कूल में अध्ययनरत 300 बच्चों के हित को प्राथमिकता देते हुए यूनिवर्सिटी द्वारा तुरंत स्कूल निर्माण को स्वीकृति देने की प्रक्रिया प्रारंभ करने के निर्देश भी दिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस स्वागत कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के किसानों की समस्याओं के समाधान को भी प्राथमिकता देने के आदेश दिए।

इसके अंतर्गत, देहगाम की खारी नदी में बबूल और झाड़ियों के कारण पानी का प्रवाह बाधित होने से किसानों की भूमि का लगातार कटाव होने के संबंध में प्राप्त शिकायत पर मुख्यमंत्री ने तुरंत बाधा हटाकर भूमि कटाव रोकने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने भी मुख्यमंत्री को सुजलाम सुफलाम योजना अंतर्गत किसानों की इस समस्या का शीघ्र समाधान करने का आश्वासन दिया ।

अन्य मामलों में खेत से गुजर रही भूमिगत सीवर लाइन के लीकेज से फसल को हो रहे नुकसान को रोकने, खेत तक जाने के रास्ते से अतिक्रमण हटाने सहित किसानों की समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु मुख्यमंत्री ने स्थानीय प्रशासन को जल्द ही समाधान करने के दिशानिर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने राज्य स्वागत कार्यक्रम अंतर्गत राज्य के नागरिकों की समस्याओं का समयसीमा में, न्यायसंगत और निष्पक्ष रूप से समाधान कर राज्य सरकार के प्रति नागरिकों का विश्वास और अधिक मजबूत करने के लिए प्रशासनिक तंत्र को संवेदनशीलता के साथ कार्य करने के निर्देश दिए।

मार्च-2026 के इस राज्य स्वागत में मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सचिव डॉ. अजय कुमार तथा विशेष कार्य अधिकारी श्री डी. के. पारेख, श्री राकेश व्यास तथा संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी एवं संबंधित जिलों के कलेक्टर, एसपी और डीडीओ उपस्थित रहे।

सुप्रीम कोर्ट के वकीलों के लिए सुरक्षा कवच की तैयारी: अलग 'वेलफेयर फंड' पर केंद्र और BCI से जवाब तलब

नई दिल्ली। देश की शीर्ष न्यायिक संस्था सुप्रीम कोर्ट ने अपने यहां प्रैक्टिस करने वाले वकीलों के भविष्य और सामाजिक सुरक्षा को लेकर एक अहम पहल की है। अदालत ने केंद्र सरकार, बार काउंसिल ऑफ इंडिया और दिल्ली बार काउंसिल को नोटिस जारी कर उनसे जवाब मांगा है। यह कदम उस याचिका पर उठाया गया है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट में वकालत करने वाले अधिवक्ताओं के लिए एक अलग और समर्पित 'वेलफेयर फंड' बनाने की मांग की गई है।

यह याचिका सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन की ओर से दायर की गई थी, जिसमें कहा गया कि मौजूदा कानूनी ढांचा शीर्ष अदालत के वकीलों की जरूरतों को पूरा करने में असफल साबित हो रहा है। इस मामले की सुनवाई जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आलोक अराधे की पीठ ने की। पीठ ने शुरुआती तौर पर ही यह माना कि इस तरह के वेलफेयर फंड की आवश्यकता समय की मांग है और इससे जुड़े कानूनी पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

दरअसल, मौजूदा एडवोकेट्स वेलफेयर फंड एक्ट में एक महत्वपूर्ण खामी बताई जा रही है। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष विकास सिंह ने अदालत में दलील दी कि वर्तमान व्यवस्था के तहत सुप्रीम कोर्ट के वकीलों को उन लाभों से वंचित रहना पड़ता है, जिनके वे हकदार हैं। उन्होंने बताया कि जब भी कोई वकील सुप्रीम कोर्ट में वकालतनामा दाखिल करता है, तो उस पर वेलफेयर स्टैंप लगाया जाता है। लेकिन इस स्टैंप

से होने वाली आय सीधे दिल्ली बार काउंसिल के पास चली जाती है, जबकि इसका लाभ सुप्रीम कोर्ट के वकीलों तक नहीं पहुंच पाता।

इसका कारण कानून में मौजूद एक तकनीकी परिभाषा है, जिसके अनुसार 'वकील' वही माना जाता है, जो किसी राज्य की बार काउंसिल में पंजीकृत हो। चूंकि सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन एक स्वतंत्र निकाय है और किसी राज्य बार काउंसिल के अंतर्गत नहीं आता, इसलिए उसके सदस्य इस वेलफेयर स्कीम के दायरे से बाहर रह जाते हैं। यही वजह है कि कई वरिष्ठ और जूनियर वकील, जो वर्षों से सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस कर रहे हैं, आपात स्थिति में किसी संस्थागत आर्थिक सहायता से वंचित रह जाते हैं।

याचिका में इस समस्या का ठोस समाधान भी सुझाया गया है। इसके तहत सुप्रीम कोर्ट के नियमों में संशोधन कर एक नया 'नियम 15A' जोड़ने की मांग की गई है। प्रस्ताव के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट में दाखिल होने वाले हर वकालतनामा पर 500 रुपये का 'लॉयर्स वेलफेयर स्टैंप' अनिवार्य किया जाए। इस स्टैंप से प्राप्त होने वाली पूरी राशि एक विशेष वेलफेयर फंड में जमा की जाए, जो केवल सुप्रीम कोर्ट के वकीलों के लिए ही उपयोग में लाई जाए।

इस प्रस्ताव की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस फंड का प्रबंधन उच्च स्तर की पारदर्शिता और विश्वसनीयता के साथ किया जाए। याचिका में सुझाव दिया गया है कि इस कोष का संचालन भारत के मुख्य न्यायाधीश या उनके द्वारा नामित किसी न्यायाधीश की अध्यक्षता में गठित समिति करे। इससे न केवल फंड के उपयोग में पारदर्शिता बनी रहेगी, बल्कि वकीलों का भरोसा भी मजबूत होगा।

इस वेलफेयर फंड की जरूरत इसलिए भी ज्यादा महसूस की जा रही है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस करने वाले कई वकील अपने-अपने गृह राज्यों की बार काउंसिल से व्यावहारिक रूप से कट जाते हैं। वे अपना अधिकतर समय दिल्ली में बिताते हैं और राज्य स्तर की योजनाओं का लाभ नहीं ले पाते। ऐसे में यदि उन्हें किसी मेडिकल इमरजेंसी, दुर्घटना या अन्य आकस्मिक परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, तो उनके पास सीमित विकल्प ही बचते हैं।

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह प्रस्ताव लागू होता है, तो यह न केवल सुप्रीम कोर्ट के वकीलों के लिए एक मजबूत सामाजिक सुरक्षा तंत्र तैयार करेगा, बल्कि पूरे देश में वकीलों के कल्याण के लिए एक नया मॉडल भी पेश करेगा। यह कदम न्यायिक व्यवस्था के उस महत्वपूर्ण स्तंभ को मजबूत करेगा, जो न्याय प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने में अहम भूमिका निभाता है।

फिलहाल, इस मामले में गेंद केंद्र सरकार और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के पाले में है। उनके जवाब और रुख के आधार पर ही आगे की कानूनी दिशा तय होगी। लेकिन इतना तय है कि अगर यह पहल सफल होती है, तो सुप्रीम कोर्ट के हजारों वकीलों के लिए यह एक बड़ी राहत और सुरक्षा कवच साबित हो सकती है।

संपादकीय

लाचार पर मार

बीमा कारोबार की जटिलताएं हमेशा से ही आमजन के लिए एक अनसुलझी गुत्थी रही हैं। हमारी भविष्य की आशंकाओं व भय पर फल-फूल रहे इस कारोबार को लेकर गाहे-बगाहे परेशान करने वाली खबरें आती रहती हैं। लेकिन इसके बावजूद तेजी से फल-फूल रहे विभिन्न बीमा कारोबारों की विसंगतियां कम नहीं हुई हैं। इसी तरह मेडिकल बीमा को लेकर बड़ी संख्या में शिकायतें सामने आती रही हैं। दरअसल, लगातार महंगी होती चिकित्सा सुविधाओं के दौर में, भविष्य में महंगे इलाज का खर्च उठाने का भरोसा दिलाकर बीमा कंपनियां लोगों को बीमा पॉलिसियां खरीदने को मानसिक रूप से तैयार कर लेती हैं। लेकिन विडंबना यह है कि जब वास्तव में कोई बीमार पड़ता है तो इलाज पर हुए खर्च के भुगतान को लेकर तमाम किंतु-परंतु बीमा कंपनियां करने लगती हैं। कई खामियां निकाली जाती हैं, जिनके बारे में बीमा धारक को पता ही नहीं होता है। कई बार तो छिपे-ढके कारण बताकर चिकित्सा खर्च की भरपाई करने से भी मना कर दिया जाता है। भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण यानी आईआरडीए के आंकड़ों ने बीमा कंपनियों के मुनाफा खेल को उजागर किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2024 में छब्बीस हजार करोड़ रुपये के बीमा दावे खारिज किए गए थे। निस्संदेह, ये आंकड़ा बीमा कंपनियों तथा पांच सितारा अस्पताल प्रबंधकों के अपवित्र गठबंधन को ही दर्शाता है। बाकायदा पिछले दिनों राज्यसभा में निजी अस्पतालों और स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के अपवित्र गठजोड़ का मामला उठाया गया। जो हर साल हजारों लोगों को कर्ज व गरीबी की दलदल में धकेल देता है। अक्सर आरोप लगता है कि मरीजों को उपचार के मुकाबले बेहद कम राशि का भुगतान किया जाता है। ऐसा नहीं है कि प्राइवेट अस्पतालों व बीमा कंपनियों के मध्य सांठगांठ के मामले सामने नहीं आते। लेकिन हमारा नियामक-तंत्र सारे घटनाक्रम की अनदेखी कर देता है। विडंबना यह भी है कि केंद्र व राज्य सरकारों के स्तर पर भी इस मुनाफाखोरी पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया जाता है, जिससे लोगों को उलटे उस्तरे से मूंडने का खेल बदस्तूर जारी रहता है।

दरअसल, लोग जब कोई स्वास्थ्य बीमा कराते हैं तो उन बारीकियों के बारे में नहीं बताया जाता है, जिसके आधार पर मरीजों के चिकित्सा बीमा राशि को खारिज किया जाता है। अक्सर इलाज के बड़े खर्चे के दावे को कई मीन-मेख निकालकर नकार दिया जाता है। कई बार तो अमानवीयता की हदें भी सामने आती हैं जब मरीज की मृत्यु पर, खर्च चुकाने में असमर्थ होने पर अस्पताल प्रबंधक परिजनों को पार्थिव शरीर तक को देने से मना कर देते हैं। जबकि इस बारे में अदालत व सरकार की तरफ से सख्त आदेश हैं कि बकाया राशि के लिए किसी मरीज के शव को रोका नहीं जा सकता। दरअसल, चिकित्सा बीमा आज देश-दुनिया में बड़ा कारोबार बन गया है। लेकिन पश्चिमी देशों में भुगतान में ईमानदारी व कार्यशैली में पारदर्शिता से इस व्यवसाय का विस्तार हुआ है। लेकिन भारत में ईमानदारी, पारदर्शिता के अभाव व दोषपूर्ण कार्यशैली से चिकित्सा बीमा के औचित्य पर ही सवाल उठते हैं। सवाल उन सरकारी विभागों पर भी है, जो बीमा कंपनियों की मनमानी पर अंकुश लगाने की पहल नहीं करती। तभी साल में करोड़ों रुपये की उगाही करने वाली बीमा कंपनियां कई तकनीकी वजहों से मरीज के इलाज में लगी रकम का बड़ा हिस्सा देने से मना कर देती हैं। वास्तव में जरूरत इस बात की है कि बीमा कराते वक्त ईमानदारी से बीमे से जुड़ी शर्तों से उपभोक्ता को अवगत कराया जाए। लेकिन इससे जुड़े जटिल व अस्पष्ट नियमों को पारदर्शी ढंग से समझाया ही नहीं जाता, जिसको वे बाद में इलाज कराने के उपरांत भुगतान रोकने का जरिया बना लेती हैं। जिसके चलते अक्सर अस्पताल में भर्ती होने पर आए खर्च और बीमा कंपनियों द्वारा भुगतान की गई राशि में बड़ा अंतर नजर आता है। निस्संदेह, देश में इस दिशा में उच्चस्तरीय स्वतंत्र जांच होनी चाहिए कि मरीजों को बीमे का कितना लाभ मिला और अस्पताल तथा बीमा कंपनियों के मुनाफे का स्तर क्या रहा। इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए निगरानी हेतु एक राष्ट्रीय तंत्र बनाया जाना जरूरी है।

वक्त बदला है तो सास को भी बदलना होगा

"हालांकि, अब महानगरों में बहुओं की पारंपरिक छवि टूट चुकी है। यों भी इन दिनों की नौकरियां ऐसी नहीं हैं कि नौकरी भी कर लो और घर के काम भी निपटा लो। इसलिए सहायक-सहायिकाओं की मदद लेनी पड़ती है।

पिछले दिनों अपने इसी अखबार के प्रथम पृष्ठ पर एक दिलचस्प खबर पढ़ी। इसमें बताया गया कि पंजाब के बठिंडा जिले के बल्लो गांव की पंचायत ने बेस्ट सास अवार्ड शुरू किया है। इसकी पहल गांव की सरपंच अमरजीत कौर ने की। इसे प्रति वर्ष आठ मार्च को यानी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिया जाएगा। छह महिलाओं को पुरस्कृत भी किया गया। यह पुरस्कार किन महिलाओं को दिया जाए, इसके लिए पूरे गांव से रिपोर्ट ली जाएगी। बहुओं और पड़ोसियों की राय पर भी ध्यान दिया जाएगा। सरपंच अमरजीत कौर ने यह भी कहा कि इससे पारिवारिक सम्बंध मजबूत होंगे। समझदार सास घर की नींव होती है, जो अपनी बहू को अपनाकर घर को स्वर्ग बना देती है। इस अवसर पर सबसे अधिक पुस्तकें पढ़ने वाली महिलाओं को भी सम्मानित किया गया। अपने समाज में लड़की को बचपन से ही सिखाया जाता है कि उसे पराए घर जाना है। पराए घर जाकर सास से निपटना है। सास की तस्वीर बहुत डरावने ढंग से पेश की जाती थी। बचपन की एक घटना अक्सर याद आती है। छठी कक्षा में पढ़ती थी। लड़कियों का स्कूल था। वहां एक बहुत वृद्ध महिला गणित पढ़ातीं। सफेद साड़ी ही पहनतीं। उनके बाल भी एकदम सन से सफेद थे। एक दिन गणित पढ़ाते-पढ़ाते, वे हम सब लड़कियों से कहने लगीं कि सिर्फ गणित पढ़ने से ही, सब कुछ नहीं होगा। जब ससुराल जाओगी तो वहां कैसे जीना है, यह सीखना पड़ेगा। एक लड़की ने पूछा कि बहन जी क्या सीखना होगा। तब वह हंसते हुए बोलीं कि सास के लिए इम्तिहान में पास होना। कैसा इम्तिहान, तो उन्होंने बताया कि हर सास का इम्तिहान लेने का तरीका अलग-अलग होता है। जैसे कि मेरी शादी जब हुई तो मैं बारह साल की थी। शादी के अगले दिन ही सास ने गेहूं और बाजरा मिलाकर सामने रख दिया कि इसे अलग-अलग करो। शाम तक काम पूरा करना है। घर के और काम भी थे। शाम क्या, पूरी रात हो गई,

फिर भी नहीं कर पाई। इसी तरह एक दिन नमक और चीनी मिलाकर रख दी। नमक में से चीनी बीननी थी। शर्त यह भी थी कि चीनी से एक भी नमक का दाना चिपका नहीं रहना चाहिए।

उनकी बातें सुनकर घबराहट-सी होने लगी। घर जाकर मां को सारी बात बताई। यह भी पूछा कि क्या अम्मा (दादी) भी तुम्हारे साथ ऐसा करती थीं। मां ने हंसकर कहा, तेरी अम्मा बड़ी कठोर स्वभाव की थीं। बहुओं को पर्दे में रखती थीं, उनकी हर बात को मानना भी पड़ता था, मगर ऐसा कभी नहीं किया। ये तो टाइम खराब करना हुआ कि बाजरे में गेहूं मिला दो और चीनी में नमक। इससे तो गेहूं साफ ही करा लिए जाते, जिससे कि काम बचता। और नमक से चीनी चाहे जितनी अलग कर ली हो, नमकीन हो गई होगी। मां ने चाहे जितना समझाया, लेकिन सास की तस्वीर ऐसी बनी रही। बड़ी होकर जब भी साथ की किसी लड़की की शादी होती और वह कहती कि उसकी सास बहुत अच्छी हैं, तो लगता कि झूठ बोल रही है। क्योंकि मान लिया था कि सास खराब ही होती हैं, जो अक्सर दिखता भी था।

Advertisement

पुराने जमाने की हिंदी फिल्मों में भी ललिता पंवार मार्का सासें दिखाई देती थीं। जिनका पहला और आखिरी काम यही होता था कि वे बहू को कैसे सताएं। इसके लिए वे अपने बेटों को बहू को पीटने और शारीरिक हिंसा करने के लिए भी उकसाती थीं। जब बहू पिटती थी, दर्शक तालियां बजाते थे। ये वे बहुएं होती थीं, जिन्हें घुट्टी में पिलाया जाता था कि जिस घर में डोली गई, वहां से अर्थी ही उठे। ये अभागी महिलाएं करतीं भी क्या, क्योंकि शादी के बाद इन्हें अपने परिवार वाले भी ससुराल के भरोसे छोड़ देते थे। तलाक लेना बहुत बदनामी का कारण बनता था। ये बहुएं न शिक्षित थीं और न ही आत्मनिर्भर। आखिर जाती भी कहां। इसलिए सास और ससुराल को सहने और समझौता करने के अलावा और कोई रास्ता भी नहीं था।

और तो और बहुत से परिवारों में गैस होते हुए भी अक्सर स्टोव बहुओं पर फट जाते थे। स्टोवों को भी मालूम था कि उन्हें बस बहुओं पर ही फटना है। अक्सर दहेज हत्याएं ऐसे ही की जाती थीं। इस संदर्भ में महान लेखिका महादेवी वर्मा का संस्मरण भाभी इतना मार्मिक है कि पढ़ते हुए आंसू बहने लगते हैं। यहां बहू को सताने के लिए सास नहीं, ननद है, वह भी विवाहित। जो जब आती है, तब अपनी विधवा भाभी को बुरी तरह से पीटती है, उसे जगह-जगह जलाती है। और उन्नीस साल की विधवा स्त्री, यह सब झेलने को मजबूर है।

इन सासों की मानसिकता पर ध्यान दें, तो ये अपनी सास के अत्याचार का बदला, बहुओं से लेती थीं। जो इन्होंने सहा, बहू भला उससे कैसे बचे और क्यों बचे। जबकि कायदे से होना यह चाहिए था कि जो अपमान, अत्याचार, जिल्लत, इन्होंने सही, वह बहू को न सहनी पड़े और एक तरह से अत्याचार का सिलसिला थमे। संयुक्त परिवारों की ये ऐसी आफतें थीं, जिनका शिकार बहुएं होती थीं। दहेज का तड़का इन अत्याचारों को बेतहाशा बढ़ाता था।

इन दिनों भी बहुत-सी रील्स और वीडियो ऐसे दिखते हैं, जहां हर बात पर सास बहू को सताते दिखाई देती है, लेकिन अंत तक आते-आते सास का ह्रदय परिवर्तन हो जाता है।

आज वक्त बदला हुआ है। लड़कियां पढ़-लिख गई हैं। अपने पांवों पर खड़ी हैं। गांव-गांव लड़कियों की आत्मनिर्भरता को परिवार और समाज ने स्वीकार कर लिया है। उनकी शिक्षा चलती रहे, इसके लिए उन्हें तरह-तरह की सरकारी सहायता मिलती है। उनकी रक्षा के लिए बहुत से कानून भी हैं। और तो और संसद में वुमेन रिजर्वेशन बिल पास हो गया है। अब लड़कियां वह नहीं रहीं, जैसी ससुराल वाले उन्हें देखना चाहते हैं।

यदि वैवाहिक विज्ञापनों पर नजर डालें, तो अब भी फेयर एंड लवली, होमली कन्या चाहिए। पता नहीं इस होमली की क्या परिभाषा है। रील्स और वीडियो की मानूं तो ये कि बहू खूब पैसे भी कमाए, लेकिन अपनी तनख्वाह पति या सास के हाथों में दे। कपड़े ऐसे पहने, जो सास को पसंद हों। सवेरे जल्दी उठकर घर का काम निपटाकर जाए और आकर काम निपटाए। इसीलिए इन दिनों परिवार का ढांचा जल्दी ही टूट जाता है। बहुत से जोड़े जल्दी ही घर वालों से अलग रहने लगते हैं। ऐसा नहीं होता, तो तलाक ले लेते हैं। बढ़ते तलाक का एक बड़ा कारण भी परिवार वालों की भूमिका है। कुछ दिन पहले एक अध्ययन में बताया गया था कि तलाक के मामलों में अब लड़कियां पहल कर रही हैं। वे ऐसे सम्बंध में नहीं रहना चाहतीं, जो उन्हें पसंद न हो। कई बार शादी के एक-दो दिन बाद ही वे ससुराल लौटने से मना कर देती हैं।

हालांकि, अब महानगरों में बहुओं की पारंपरिक छवि टूट चुकी है। यों भी इन दिनों की नौकरियां ऐसी नहीं हैं कि नौकरी भी कर लो और घर के काम भी निपटा लो। इसलिए सहायक-सहायिकाओं की मदद लेनी पड़ती है।

प्रेरणा

स्वतंत्रता से बढ़कर कुछ नहीं: राष्ट्रहित में त्याग की अमर प्रेरणा

मानव इतिहास के पन्नों में ऐसे अनेक प्रसंग दर्ज हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि जब भी राष्ट्र और व्यक्तिगत हितों के बीच चयन की घड़ी आती है, तब सच्चे देशभक्त बिना किसी हिचकिचाहट के राष्ट्र को सर्वोपरि रखते हैं। त्याग, बलिदान और समर्पण—ये तीनों ही ऐसे स्तंभ हैं, जिन पर किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की नींव टिकी होती है। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का एक अत्यंत प्रेरणादायक प्रसंग इस सत्य को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

यह घटना उस समय की है जब अमेरिका ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए संघर्षरत था। बोस्टन नगर उस समय इस संघर्ष का प्रमुख केंद्र बना हुआ था। ब्रिटिश सेना ने बोस्टन पर कब्जा कर लिया था और शहर में अपनी सैन्य शक्ति के बल पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। हालांकि, इस कब्जे के बावजूद ब्रिटिश सेना स्वयं एक कठिन परिस्थिति में फंस गई थी। नगर के भीतर बंद होने के कारण उनके लिए रसद और आपूर्ति का संकट गहराने लगा था। यह स्थिति अमेरिकी सेनाओं के लिए एक अवसर के रूप में उभरी।

अमेरिकी सेनापति जॉर्ज वाशिंगटन ने इस परिस्थिति का गहन विश्लेषण किया और एक कठोर लेकिन प्रभावी रणनीति प्रस्तावित की। उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस के समक्ष यह सुझाव रखा कि यदि बोस्टन नगर पर बमबारी की जाए, तो ब्रिटिश सेना को वहां से बाहर निकलने के लिए मजबूर किया जा सकता है। यह प्रस्ताव सैन्य दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता था, लेकिन इसके साथ एक बड़ा नैतिक और व्यक्तिगत द्वंद्व भी जुड़ा हुआ था।

जब यह प्रस्ताव कांग्रेस के सामने रखा गया, तो सभी सदस्य गहन असमंजस में पड़ गए। इसका कारण केवल नगर की भौतिक क्षति नहीं था, बल्कि इससे जुड़े व्यक्तिगत हित भी थे। विशेष रूप से कांग्रेस के अध्यक्ष सर जॉन हैनकॉक के लिए यह निर्णय अत्यंत कठिन था। उनकी अधिकांश संपत्ति बोस्टन में ही स्थित थी। यदि बमबारी होती, तो उनकी जीवनभर की कमाई और संपत्ति नष्ट हो सकती थी। यह केवल आर्थिक हानि का प्रश्न नहीं था, बल्कि उनके व्यक्तिगत जीवन और भविष्य पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ सकता था।

सभा में उपस्थित अन्य सदस्य भी इस बात को समझ रहे थे। वे यह सोचकर असमंजस में थे कि क्या किसी व्यक्ति की निजी संपत्ति को इस प्रकार नष्ट कर देना उचित होगा, भले ही वह राष्ट्रहित में ही क्यों न हो। इस प्रकार की स्थिति में अक्सर निर्णय लेना कठिन हो जाता है, क्योंकि इसमें भावनाओं, नैतिकता और कर्तव्य का टकराव होता है।

किन्तु ऐसे ही कठिन क्षणों में सच्चे नेतृत्व और महान व्यक्तित्व की पहचान होती है। सर जॉन हैनकॉक ने इस असमंजस को तुरंत भांप लिया। वे अपने स्थान से उठे और अत्यंत दृढ़ता और स्पष्टता के साथ सभा को संबोधित किया। उनके शब्द केवल एक भाषण नहीं थे, बल्कि एक महान आदर्श की स्थापना थे। उन्होंने कहा कि यह सत्य है कि उनकी समस्त संपत्ति बोस्टन में स्थित है और बमबारी से उसका नष्ट होना निश्चित है। लेकिन यदि राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए यह आवश्यक है, तो इस निर्णय में तनिक भी विलंब नहीं होना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उन्हें अपनी संपत्ति के नष्ट होने का कोई दुख नहीं होगा, बल्कि उन्हें गर्व और प्रसन्नता होगी कि उनका व्यक्तिगत नुकसान राष्ट्र की स्वतंत्रता के मार्ग में सहायक बना।

यह कथन केवल शब्दों का समूह नहीं था, बल्कि एक गहरी भावना और उच्च आदर्श का प्रतीक था। यह दर्शाता है कि सच्चे देशभक्त के लिए राष्ट्र की स्वतंत्रता और सम्मान किसी भी व्यक्तिगत लाभ या हानि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है। सर जॉन हैनकॉक का यह त्याग और समर्पण उस समय के अन्य सदस्यों के लिए भी एक प्रेरणा बन गया। उनके इस साहसिक निर्णय ने न केवल कांग्रेस को स्पष्ट दिशा दी, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता केवल युद्ध जीतने से नहीं मिलती, बल्कि इसके लिए त्याग, बलिदान और कठिन निर्णय लेने की क्षमता भी आवश्यक होती है। यदि उस समय नेता अपने व्यक्तिगत हितों को प्राथमिकता देते, तो शायद स्वतंत्रता का संघर्ष उतना प्रभावी नहीं हो पाता।

आज के समय में जब हम स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं, तब ऐसे प्रसंग हमें यह याद दिलाते हैं कि यह स्वतंत्रता कितनी कठिनाइयों और बलिदानों के बाद प्राप्त हुई है। यह केवल इतिहास की एक घटना नहीं है, बल्कि एक ऐसी सीख है जो हर पीढ़ी को प्रेरित करती है कि जब भी राष्ट्रहित और स्वार्थ के बीच चुनाव करना हो, तो सही मार्ग का चयन करें।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि त्याग केवल युद्ध के मैदान में ही नहीं होता, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में इसकी आवश्यकता होती है। चाहे वह सामाजिक कार्य हो, प्रशासनिक निर्णय हों या व्यक्तिगत जीवन की चुनौतियाँ—हर जगह यह सिद्धांत लागू होता है कि बड़े उद्देश्य के लिए छोटे त्याग आवश्यक होते हैं।

सर जॉन हैनकॉक का यह उदाहरण हमें यह सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने का साहस रखता हो। जो अपने स्वार्थ को त्यागकर समाज और राष्ट्र के हित को प्राथमिकता देता हो। यही वह गुण है, जो किसी भी व्यक्ति को महान बनाता है और उसे इतिहास में अमर कर देता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र की स्वतंत्रता और सम्मान से बढ़कर कोई भी संपत्ति नहीं होती। जो व्यक्ति इस सत्य को समझ लेता है, वही सच्चे अर्थों में देशभक्त कहलाने का अधिकारी होता है। सर जॉन हैनकॉक का यह त्यागपूर्ण निर्णय न केवल अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए एक प्रेरणादायक संदेश भी है कि जब बात राष्ट्र की हो, तो व्यक्तिगत हितों को त्यागना ही सच्ची देशभक्ति है।

मर्यादा, सुशासन और शांति के विश्वनायक

रामनवमी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के नैतिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का पुण्य और पवित्र अवसर है। आज जब दुनिया युद्ध, हिंसा, आतंक, असहिष्णुता, पारिवारिक विघटन, राजनीतिक अविश्वास और नैतिक पतन जैसी अनेक समस्याओं से जूझ रही है, तब मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन-दर्शन केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि मानव समाज और विश्व-राजनीति के लिये मार्गदर्शन का स्रोत बन सकता है। श्रीराम का जीवन केवल एक धार्मिक आख्यान नहीं है, बल्कि वह शासन, समाज, परिवार, युद्ध, कूटनीति, न्याय और मानव संबंधों का एक संपूर्ण दर्शन है, जिसे आधुनिक संदर्भों में पुनर्पाठ की आवश्यकता है। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन विलक्षणताओं एवं विशेषताओं से ओतप्रोत है, प्रेरणादायी है। उन्हें अपने जीवन की खुशियों से बढक़र लोक जीवन की चिंता थी, तभी उन्होंने अनेक तरह के त्याग के उदाहरण प्रस्तुत किये। राजा के इन्हीं आदर्शों के कारण ही भारत में रामराज्य की आज तक कल्पना की जाती रही है। श्रीराम के बिना भारतीय समाज की कल्पना संभव नहीं है। अब श्रीराम मन्दिर के रूप में एक शक्ति एवं सिद्धि स्थल बन गया है, जो रामराज्य के सुदीर्घ काल के सपने को आकार देने का सशक्त एवं सकारात्मक वातावरण भी बनेगा। श्रीराम मंदिर जीवनमूल्यों की महक एवं प्रयोगशाला के रूप में उभरेगा। क्योंकि श्रीराम का चरित्र ही ऐसा है जिससे न केवल भारत बल्कि दुनिया में शांति, अहिंसा, अयुद्ध, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं अमन का साम्राज्य स्थापित होगा। ईरान-इजरायल एवं यूक्रे-रूस के बीच चल रहा युद्ध एवं इस परिप्रेक्ष्य में विश्वयुद्ध की संभावनाओं को देखते हुए श्रीराम के जीवन आदर्शों को विश्व व्यापी बनाने की अपेक्षा है, ताकि दुनिया शांति एवं चैन से जी सके। श्रीराम का जीवन हमें सबसे पहले मर्यादा का संदेश देता है। आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी समस्या मर्यादा का संकट है-राजनीति में मर्यादा नहीं, समाज में मर्यादा नहीं, परिवार में मर्यादा नहीं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी मर्यादा नहीं। श्रीराम का जीवन बताता है कि शक्ति से अधिक महत्वपूर्ण मर्यादा होती है। उन्होंने सामर्थ्य होते हुए भी राज्य के लिये संघर्ष नहीं किया, बल्कि पिता की आज्ञा और समाज की मर्यादा को सर्वोच्च माना। आज यदि विश्व राजनीति में मर्यादा और नैतिकता का समावेश हो जाये, तो अनेक युद्ध स्वतः समाप्त हो सकते हैं। राष्ट्र यदि केवल शक्ति और विस्तारवाद की नीति छोड़कर मर्यादा और न्याय की नीति अपनाएं, तो विश्व शांति संभव हो सकती है। आज दुनिया के अनेक युद्ध चाहे वह रूस-यूक्रेन युद्ध हो, मध्य-पूर्व के संघर्ष हों या अन्य क्षेत्रीय युद्ध-इन सबके मूल में अहंकार, विस्तारवाद, संसाधनों पर अधिकार और वैचारिक वर्चस्व की लड़ाई है। श्रीराम का युद्ध दर्शन इससे बिल्कुल भिन्न था। उन्होंने कभी युद्ध को लक्ष्य नहीं बनाया, बल्कि युद्ध उनके लिये अंतिम विकल्प था। उन्होंने पहले संवाद किया, फिर दूत भेजा, फिर समझौते का प्रयास किया और अंत में जब सभी रास्ते बंद हो गये तब युद्ध किया। यह युद्ध नीति आज के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिये एक आदर्श मॉडल हो सकती है-पहले संवाद, फिर कूटनीति, फिर प्रतिबंध और अंत में युद्ध। आधुनिक विश्व यदि इस क्रम को स्वीकार कर ले, तो युद्धों की संख्या कम हो सकती है।

श्रीराम का जीवन सुशासन का भी आदर्श प्रस्तुत करता है, जिसे आज "रामराज्य" के रूप में जाना जाता है। रामराज्य का अर्थ केवल धार्मिक राज्य नहीं, बल्कि न्याय, समानता, सुरक्षा, समृद्धि और नैतिक शासन व्यवस्था है। रामराज्य में राजा और प्रजा के बीच दूरी नहीं थी, शासन उत्तरदायी था, न्याय त्वरित था, समाज में भय नहीं था और आर्थिक असमानता अत्यधिक नहीं थी। आज लोकतंत्र होने के बावजूद जनता और शासन के बीच दूरी बढ़ती जा रही है, राजनीति सेवा से अधिक सत्ता का माध्यम बनती जा रही है। श्रीराम का शासन हमें बताता है कि शासन का उद्देश्य सत्ता नहीं, सेवा होना चाहिए। आधुनिक लोकतंत्र यदि रामराज्य की अवधारणा से प्रेरणा ले, तो लोकतंत्र अधिक मानवीय और उत्तरदायी बन सकता है। श्रीराम का जीवन पारिवारिक मूल्यों का भी अद्भुत उदाहरण है। आज दुनिया में परिवार टूट रहे हैं, पीढ़ियों के बीच संवाद समाप्त हो रहा है, रिश्ते स्वार्थ पर आधारित होते जा रहे हैं। श्रीराम ने पुत्र के रूप में आदर्श प्रस्तुत किया, भाई के रूप में आदर्श प्रस्तुत किया, पति के रूप में आदर्श प्रस्तुत किया और मित्र के रूप में भी आदर्श प्रस्तुत किया। भरत और राम का संबंध त्याग और प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है। आज यदि परिवारों में अधिकार की जगह कर्तव्य और स्वार्थ की जगह त्याग की भावना आ जाये, तो समाज की आधी समस्याएं समाप्त हो सकती हैं।

श्रीराम ने मर्यादा के पालन के लिए राज्य, मित्र, माता-पिता, यहां तक कि पत्नी का भी साथ छोड़ा। इनका परिवार, आदर्श भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। श्रीराम रघुकुल में जन्मे थे, जिसकी परम्परा प्रान जाहुं बरु बचनु न जाई की थी। श्रीराम हमारी अनंत मर्यादाओं के प्रतीक पुरुष हैं इसलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से पुकारा जाता है। हमारी संस्कृति में ऐसा कोई दूसरा चरित्र नहीं है जो श्रीराम के समान मर्यादित, धीर-वीर, न्यायप्रिय और प्रशांत हो। वाल्मीकि के श्रीराम लौकिक जीवन की मर्यादाओं का निर्वाह करने वाले वीर पुरुष हैं। उन्होंने लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध किया और लोक धर्म की पुनःस्थापना की।

अभियान

जहां आस्था बनती है संरक्षण: असम के हयग्रीव माधव धाम की अद्भुत

भारत की आध्यात्मिक धारा केवल पूजा-पाठ और मंदिरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, जीव-जंतुओं और मनुष्य के बीच एक गहरे और संवेदनशील संबंध को भी दर्शाती है। इसी अनूठे समन्वय का एक अद्भुत उदाहरण पूर्वोत्तर भारत के राज्य असम में स्थित श्री हयग्रीव माधव मंदिर है, जो अपनी रहस्यमयी परंपराओं, ऐतिहासिक महत्त्व और धार्मिक समन्वय के लिए पूरे देश में विशेष पहचान रखता है। कामरूप जिले के हाजो क्षेत्र में मणिकूट पर्वत पर स्थित यह मंदिर सदियों से आस्था का केंद्र बना हुआ है, जहाँ हर वर्ष हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुँचते हैं और एक अनूठी परंपरा का हिस्सा बनते हैं।

इस मंदिर की सबसे विशिष्ट बात यह है कि यहाँ श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूरी होने पर जीवित कछुओं को अर्पित करते हैं या उन्हें भोजन कराते हैं। यह परंपरा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह जीवों के प्रति करुणा, संरक्षण और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना को भी दर्शाती है। यहाँ के 'माधव पुखरी' नामक तालाब में सैकड़ों की संख्या में दुर्लभ प्रजाति के कछुए रहते हैं, जिन्हें स्थानीय लोग अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ देखते हैं। इन कछुओं को भगवान भगवान विष्णु के कूर्म अवतार का प्रतीक माना जाता है, जिसके कारण इन्हें पूजनीय स्थान प्राप्त है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर में भगवान विष्णु के हयग्रीव अवतार की पूजा की जाती है। पौराणिक कथा के अनुसार, इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने मधु और कैटभ नामक असुरों का वध किया था, जिससे यह स्थान दिव्य शक्ति का केंद्र बन गया। हयग्रीव अवतार को ज्ञान और बुद्धि का प्रतीक माना जाता है, इसलिए यहाँ आने वाले श्रद्धालु न केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति की कामना भी करते हैं।

इस मंदिर का इतिहास भी उतना ही रोचक और प्राचीन है। माना जाता है कि वर्तमान मंदिर का निर्माण 16वीं शताब्दी में कोच वंश के राजा रघुदेव नारायण द्वारा कराया गया था, हालांकि कई विद्वान इसे इससे भी अधिक प्राचीन मानते हैं। मंदिर की वास्तुकला पत्थरों पर आधारित है, जिसमें सुंदर नक्काशी और पौराणिक आकृतियों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। दीवारों पर उकेरे गए हाथियों, देवताओं और अन्य प्रतीकों की आकृतियाँ उस समय की कला और शिल्प कौशल की उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।

मंदिर परिसर का वातावरण अत्यंत शांत और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर है। मणिकूट पर्वत की ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहाँ से आसपास का दृश्य अत्यंत मनोहारी दिखाई देता है। चारों ओर फैली हरियाली, स्वच्छ हवा और प्राकृतिक सौंदर्य इस स्थान को एक अद्भुत आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करते हैं। यहाँ आने वाले लोग केवल दर्शन ही नहीं करते, बल्कि इस शांत वातावरण में अपने मन को भी विश्राम देते हैं।

इस मंदिर की एक और विशेषता इसका बौद्ध धर्म से गहरा संबंध है। जहाँ एक ओर हिंदू श्रद्धालु इसे भगवान विष्णु के हयग्रीव अवतार का पवित्र स्थल मानते हैं, वहीं तिब्बती बौद्ध अनुयायी इसे अत्यंत पवित्र स्थान के रूप में देखते हैं। उनकी मान्यता है कि इसी स्थान पर भगवान बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। इस कारण बौद्ध अनुयायी इस मंदिर को 'महामुनि' का मंदिर कहते हैं और बड़ी संख्या में यहाँ दर्शन करने आते हैं। यह धार्मिक समन्वय इस मंदिर को और भी विशेष बनाता है, क्योंकि यहाँ दो अलग-अलग धर्मों की आस्थाएँ एक ही स्थान पर मिलती हैं।

यह मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र ही नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का भी एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। जिस प्रकार यहाँ कछुओं की रक्षा की जाती है और उन्हें पूजनीय माना जाता है, वह यह दर्शाता है कि धार्मिक परंपराएँ भी प्रकृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। आज के समय में, जब पर्यावरण संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है, ऐसे में यह मंदिर हमें यह सिखाता है कि हम अपनी आस्था के माध्यम से भी प्रकृति की रक्षा कर सकते हैं।

समय के साथ-साथ यह मंदिर पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन गया है। देश-विदेश से लोग यहाँ की अनूठी परंपराओं और सांस्कृतिक विशेषताओं को देखने आते हैं। यह स्थान उन लोगों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है, जो भारत की विविधता, आध्यात्मिकता और प्रकृति के साथ उसके गहरे संबंध को समझना चाहते हैं।

यहाँ की परंपराएँ केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि वे एक गहरी जीवनशैली को दर्शाती हैं, जिसमें मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने की शिक्षा मिलती है। कछुओं को भोजन कराना या उन्हें तालाब में छोड़ना केवल एक रस्म नहीं, बल्कि यह उस भावना का प्रतीक है, जिसमें हर जीव के प्रति सम्मान और प्रेम निहित होता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि हाजो का यह पवित्र मंदिर आस्था, इतिहास, संस्कृति और प्रकृति का एक अद्भुत संगम है। यह स्थान हमें यह सिखाता है कि सच्ची भक्ति केवल मंदिरों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह हमारे व्यवहार, हमारे दृष्टिकोण और हमारे जीवन के हर पहलू में झलकती है। यहाँ की शांति, परंपराएँ और आध्यात्मिक ऊर्जा हर आगंतुक को एक नई सोच और एक गहरे अनुभव के साथ लौटने के लिए प्रेरित करती हैं।

जो भी व्यक्ति इस मंदिर की यात्रा करता है, वह केवल एक धार्मिक स्थल के दर्शन नहीं करता, बल्कि वह एक ऐसी परंपरा का अनुभव करता है, जो सदियों से जीवित है और जो हमें यह सिखाती है कि जब आस्था और प्रकृति एक साथ चलते हैं, तो वह केवल पूजा नहीं, बल्कि जीवन का एक सुंदर और संतुलित स्वरूप बन जाती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 2 दशक में गुजरात बना उल्लेखनीय शहरीकरण का साक्षी

- विशाल रोड एवं रेलवे नेटवर्क तथा विश्व स्तरीय अत्याधुनिक एयरपोर्ट्स के निर्माण के साथ गुजरात ने नागरिकों को दी सरल व उत्तम कनेक्टिविटी
- स्मार्ट सिटी मिशन अंतर्गत राज्य के 6 स्मार्ट शहरों में 11 हजार करोड़ रुपए से अधिक के 357 प्रोजेक्ट्स पूर्ण किए गए
- शहरी विकास वर्ष 2025 के दौरान अमृत 2.0 योजना अंतर्गत जलापूर्ति विभाग द्वारा 630.39 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स, जबकि सीवेज व्यवस्था के लिए 575.58 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स क्रियान्वित
- वर्ष 2026-27 के स्टेट बजट में राज्य सरकार ने शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग के लिए 33504 करोड़ रुपए का भारी बजट दिया

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 31 मार्च, 2026 को गुजरात की यात्रा पर आएंगे। इस यात्रा के दौरान वे शहरी विकास के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास करेंगे। उल्लेखनीय है कि तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2005 को शहरी विकास वर्ष घोषित किया था और उस वर्ष के दौरान शहरी क्षेत्रों में ढाँचागत सुविधाओं के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। गुजरात की इस शहरी विकास यात्रा को 2025 में 20 वर्ष पूरे हुए और इन 20 वर्षों के दौरान गुजरात उल्लेखनीय शहरीकरण का साक्षी बना। गुजरात के शहरों का आधुनिक समय के अनुरूप सुगठित एवं सुनियोजित विकास किया गया है। शहरी विकास की इस यात्रा को आगे बढ़ाने तथा राज्य में वर्ल्ड क्लास सिटी डेवलपमेंट को वेग देने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने गत वर्ष के बजट में वर्ष 2025 को 'शहरी विकास वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। उल्लेखनीय है कि शहरी विकास की इस यात्रा के दौरान राज्य के सभी शहरों में सड़क-मार्गों, स्ट्रीट लाइट, पीने के पानी की पाइप लाइन, सीवेज व्यवस्था, शहरी बाग-बगीचे जैसे अनेक नागरिकोन्मुखी कार्य पूरे किए गए हैं। सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को शहरी क्षेत्रों में आवास प्रदान किए गए हैं। राज्य में अनेक टाउन प्लानिंग स्कीमों को मंजूरी दी गई है, जो शहरीकरण की प्रक्रिया को वेग देती हैं। शहरों के योजनापूर्वक विकास से आज शहरों में बसे नागरिक 'ईज ऑफ लिविंग' का अनुभव कर रहे हैं।

गुजरात में सुदृढ़ रोड, रेलवे तथा एयर कनेक्टिविटी

विशाल रोड व रेलवे नेटवर्क, अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट्स तथा बंदरगाहों के विकास के साथ गुजरात में एक सुविकसित परिवहन नेटवर्क है, जो नागरिकों को उत्तम कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान करता है। आज राज्य के शहरी क्षेत्रों में बढ़ रहे परिवहन के सुचारु संचालन के लिए ओवरब्रिज तथा अंडरब्रिज का निर्माण किया जा रहा है। विशेषकर राज्य के चार महानगरों अहमदाबाद, वडोदरा, राजकोट व सूरत में ओवरब्रिज-अंडरब्रिज निर्माण द्वारा एक सुदृढ़ रोड नेटवर्क बनाया जा रहा है, जिससे नागरिकों के लिए परिवहन आसान बन रहा है।

राज्य में द्वारका तथा बेट द्वारका को जोड़ने वाले अत्याधुनिक सिग्नेचर ब्रिज 'सुदर्शन सेतु' का लोकार्पण किया गया है, जिसके साथ एप्रोच रोड तथा पार्किंग सुविधा भी विकसित की गई है। अब लोगों के लिए द्वारका से बेट द्वारका जाना बहुत सरल हो गया है। इसके अलावा; गुजरात में जामनगर-बठिंडा हाईवे, वडोदरा-मुंबई एक्सप्रेसवे, पोरबंदर-द्वारका नेशनल हाईवे आदि का भी निर्माण किया जा रहा है, जो राज्य के रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर को अधिक सुदृढ़ बनाएंगे। इसके साथ ही; गत वर्ष के बजट में नमोशक्ति तथा सोमनाथ-द्वारका; इन दो ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे के निर्माण की घोषणा की गई थी। नमोशक्ति एक्सप्रेसवे डीसा से पीपावाव तक बनाया जाएगा, जिसकी लंबाई 430 किलोमीटर होगी, तो सोमनाथ-द्वारका एक्सप्रेसवे की लंबाई 680 किलोमीटर होगी, जो अहमदाबाद, राजकोट तथा द्वारका के आसपास क्षेत्रों के लिए कनेक्टिविटी सुगम बनाएगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दीर्घदृष्टि के कारण आज गुजरात में मेट्रो रेल चल रही है। हाल ही में अहमदाबाद मेट्रो फेज-2 पूरा हुआ है, जिसके जरिये अहमदाबाद-गांधीनगर के बीच कनेक्टिविटी मजबूत हुई है। सूरत मेट्रो के लिए राज्य सरकार द्वारा 23 ट्रेनसेट्स का ऑर्डर दिया गया है, जिसके पूरा होने पर सूरत शहर टिकाऊ शहरी परिवहन के सुदृढ़ विस्तार का साक्षी बनेगा। देश का पहला बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट भी गुजरात में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसके अलावा; प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सितंबर-2022 में गुजरात को सर्वप्रथम नई वंदे भारत ट्रेन की भेंट दी थी। आज गुजरात में 5 वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं। साथ ही; अमृत भारत स्टेशन योजनांतर्गत गुजरात के 89 रेलवे स्टेशनों की कायापलट होने जा रही है, जिनमें से 18 रेलवे स्टेशनों का लोकार्पण हो चुका है।

प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन तथा मुख्यमंत्री के नेतृत्व में गुजरात में एयरपोर्ट्स का भी आधुनिक विकास हुआ है। 1405 करोड़ रुपए की लागत से राजकोट में हीरासर ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट का निर्माण किया गया है। इस नए एयरपोर्ट के निर्माण के बाद राजकोट के व्यावसायिक विकास को गति मिली है। साथ ही; 3400 करोड़ रुपए की लागत से सूरत अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट कार्यरत किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की महत्वाकांक्षी पहल 'उड़े देश का आम नागरिक' यानी उड़ान योजनांतर्गत गुजरात में भावनगर, जामनगर, कंडला, केशोद, मुंद्रा, पोरबंदर एयरपोर्ट्स पर स्थानीय एयर कनेक्टिविटी में वृद्धि हुई है।

अमृत 2.0 योजनांतर्गत जलापूर्ति के 630.39 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स, सीवेज व्यवस्था के 575.58 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स क्रियान्वित

शहरी क्षेत्रों में आधारभूत इन्फ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वर्ष 2015 में अटल मिशन फॉर रिजुवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन (AMRUT) यानी अमृत योजना लागू की गई थी। इसके बाद वर्ष 2021 में उनके नेतृत्व में अमृत 2.0 योजना लागू की गई, जिसका उद्देश्य शहरों को 'जल सुरक्षित' तथा आत्मनिर्भर बनाना था। अमृत 2.0 अंतर्गत गुजरात में शहरी विकास वर्ष 2025 के दौरान जलापूर्ति के 630.39 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स क्रियान्वित किए गए, जिनसे 82328 घरों को विश्वसनीय पानी की पहुँच सुनिश्चित हुई। अमृत 2.0 सीवेज व्यवस्था अंतर्गत 575.58 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स लागू किए गए, जिसमें 24206 घरों को समाविष्ट किया गया। 67 एमएलडी अतिरिक्त सीवेज शुद्धीकरण क्षमता तथा 113.31 किलोमीटर नई सीवेज लाइन बिछाए जाने के कारण नागरिकों को स्वच्छ वातावरण तथा अधिक अच्छे सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों का लाभ मिल रहा है।

"असाध्य को साध्य बनाते श्री राम"

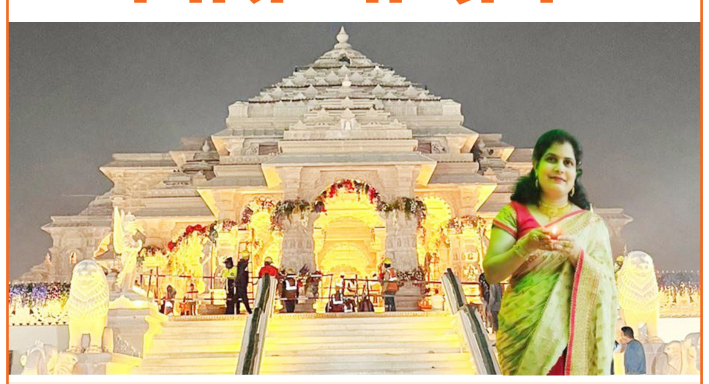

राम नाम की महिमा तो देवाधिदेव महादेव से श्रेष्ठ कोई भी व्यक्त नही कर सकता, जो गृहस्थ जीवन में माता उमा सहित प्रभु राम की आराधना में लीन रहते है। महादेव ने सिर्फ राम नाम को रखकर बाकी सभी वितरित कर दिया था। भगवान श्री राम के प्रति महादेव का प्रेम इतना अद्भुत है कि वे राम नाम श्रवण के लिए शमशान में निवास करते है। वे माता पार्वती को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने पर बताते है कि है देवी राम नाम विष्णु सहस्त्रनाम के तुल्य है। मैं सर्वदा राम नाम में ही रमन करता हूँ। महादेव ने अपने 11वें रुद्र अवतार में भी श्री राम के प्रति अपना अनन्य प्रेम और भक्ति प्रदर्शित की। हनुमान सदैव श्री राम के सानिध्य में रहना चाहते है। राम भक्ति में ही वे आनंद के अभिभूत रहते है।

भगवान राम के अवतरण में असाध्य को साध्य बनाने का अनूठा रहस्य छुपा है। भगवान श्री राम के जीवन में धैर्य सबसे अनूठा मूल मंत्र रहा है, जो नारायण स्वरूप श्री राम पलक झपकते ही सृष्टि का सर्वस्व परिवर्तित कर सकते थे, उन्होने श्रीराम बनकर छोटे-छोटे कार्यो को संपादित कर अपने लक्ष्य को साधा। जिनकी सेवा में समस्त सृष्टि सेवारत रहती है उन्होने राम से श्रीराम बनने की यात्रा में सहजता, सरलता और त्याग को अपनाकर छोटे-छोटे संसाधन जुटाकर उन संसाधनों से विजय को प्राप्त करना सिखाया। दुनिया अक्सर असमानता के भाव से दूसरों को न्यून समझकर अस्वीकार करती है, वहीं श्रीराम ने वानर सेना का सहयोग लेकर दुनिया को सफलता का मूल मंत्र सिखाया कि हर कोई स्वयमेव श्रेष्ठ होता है।

श्रीराम के चरित्र में हमें रणभूमि के साथ मनभूमि पर भी विजय प्राप्त करने का संदेश मिलता है। जिन सीता माता के श्रीराम वन-वन भटके, जिनको रावण की कैद से मुक्त करवाने के लिए श्रीराम ने युद्ध तक का मार्ग तय किया, उनको छोड़ना श्रीराम के लिए सहज नहीं होगा, पर श्रीराम की जीवन यात्रा में स्वयं का सुख निहित नहीं था। वे तो जनकल्याण के लिए अवतरित हुए थे। मर्यादा पुरषोत्तम स्वरूप को साकार रूप देने आए थे, इसलिए अपनी संतान के विरह के मार्ग को भी सहर्ष स्वीकार किया। श्रीराम की पूरी जीवन यात्रा प्रत्येक स्वरूप में नए आयामों को स्थापित करने के लिए थी। उन्होने राज्य का भोग नहीं अपितु वनवास में रहकर अपने भक्तों की प्रार्थना और मनोरथ को सुना। भक्ति के अधीन होकर वे स्वयं अपने भक्तों के उद्धार के लिए जनमानस के बीच गए। जिनके चरण कमल के समान है, जिनके नयन कमल के समान है उन श्रीराम ने वनवास की प्रतिकूलता भी सहर्ष स्वीकार की। श्रीराम की विलक्षण लीला में माया रूपी सोने के मृग का अनुसरण करना भी शामिल था। स्वयं ब्रह्म होकर माया के पीछे दौड़ना मानवीय लीला का ही अंग है, क्योंकि उन्हें तो आगामी वर्षो के लिए मानव कल्याण के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना था। प्रत्येक परिस्थिति से समाज को शिक्षा देना था। श्रीराम का जीवन हमें यह शिक्षा देता है कि यदि जीवन में कुछ अप्रत्याशित भी घटता है तो उस पर अतिरिक्त प्रतिक्रिया न देकर नियति के निर्णय को सहज स्वीकार करना चाहिए। श्रीराम ने यह सिखाया की जीवन हमारे अनुसार नहीं बल्कि नियति के अनुसार चलता है। प्रजा की प्रसन्नता के लिए श्रीराम ने अपना सुख, नींद, चैन, सर्वस्व सहर्ष ही त्याग दी।

श्रीराम ने शबरी की कुटिया में स्वयं जाकर यह सिद्ध किया कि यदि भक्त की भक्ति, प्रतीक्षा और विश्वास अडिग है तो प्रभु कभी उसे अस्वीकार नहीं करते। श्रीराम ने देवी अहिल्या को भी पाप के श्राप से मुक्त कर उनका उद्धार किया। श्रीराम की साधना तो सदैव भक्त का हित ही करती है। श्रीराम हमें पाप और संताप से पूर्णतः मुक्त कर सकते है। राम नाम हमें कुमति से सुमति प्रदान करता है। श्रीराम की प्रत्येक लीला मानव जीवन को साहस, धैर्य और त्याग को आत्मसात करने की प्रेरणा देती है।

राम नाम तो सभी अमंगल का हरण करने वाला है, इसलिए जब श्रीराम हृदय में वियरजमान हो जाते है तो सर्वत्र मंगल ही मंगल होता है। श्रीराम के अवतरण में छल-कपट कहीं भी दृष्टिगत नहीं होता है। राम नाम मन की पवित्रता और निर्मलता का कारक है और रामायण इस बात का साक्षी है कि यदि मन में श्रीराम की साधना दृढ़ हो तो श्रीराम का जीवन में आना निश्चित है। निश्छल भक्ति होने पर ही श्रीराम के चरण पखारने को मिलते है और प्रभु स्वयं चलकर अपने भक्त को यह सौभाग्य देते है। यह केवट का प्रसंग हमें सिखाता है। राम के जीवन में निर्मलता और सरलता का प्रवाह सर्वत्र विद्यमान था। मन का भाव ही श्रीराम की कृपा प्रदान करवाता है। जब श्रीराम ने पृथ्वी पर लीला समाप्त कर वापस प्रस्थान करने हेतु हनुमान जी से कहा तो हनुमान जी ने पूछा क्या प्रभु मुझे वहाँ श्रीराम कथा श्रवण करने को मिलेगी और यह जानकर ही उन्होने धरती पर निवास करने का निश्चय किया, इसी कारण वे सदैव श्रीराम कथा में उपस्थित रहते है, क्योंकि उन्हें राम नाम प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

राम नाम तो हमें जीवन में शाश्वत यश और आनंद प्रदायक है। श्रीराम के स्वरूप में सभ्यता, विचारधारा, संस्कृति एवं समानता का उत्कृष्ट रूप समन्वित है। राम नाम कि उत्कृष्टता तो उनके स्वरूप से भी अधिक है (राम से बड़ा राम का नाम)। राम का नाम तो इतना औदार्य है कि वो पात्र और अपात्र के निर्णयों में नहीं उलझता। वो तो सदैव कल्याण का मार्ग चयनित करता है। मन

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अंतर्गत लोगों को मिला अपने सपनों का घर

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) लागू होने के बाद राज्य के शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीब एवं निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों का अपने घर का सपना साकार हो रहा है। इस योजनांतर्गत राज्य के शहरी क्षेत्रों में 919204 आवासों का निर्माण किया गया है। इस योजना के क्रियान्वयन में गुजरात समग्र देश में अग्रसर है। इसके अलावा; राजकोट शहर में लाइटहाउस प्रोजेक्ट अंतर्गत मोनोलिथिक कंक्रीट कन्स्ट्रक्शन टेक्नोलॉजी का उपयोग कर कुल 1144 आवासों का निर्माण किया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) की सफलता के चलते वर्ष 2025 में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 घोषित की गई, जिसके अंतर्गत 1 लाख से अधिक आवास मंजूर किए गए हैं।

गुजरात में 9 नई महानगर पालिकाएँ घोषित की गईं

गुजरात सरकार द्वारा 9 नगर पालिकाओं को महानगर पालिकाएँ घोषित किया गया; जिनमें आणंद, नडियाद, सुरेन्द्रनगर, गांधीधाम, मोरबी, नवसारी, मेहसाणा, वापी तथा पोरबंदर शामिल हैं। इसके साथ ही; अब राज्य में कुल 17 महानगर पालिकाएँ हुई हैं। महानगर पालिकाओं में शहरी आयोजन संगठित व सुनियोजित रूप से होता है, जिसका लाभ इन नई महानगर पालिकाओं को मिल रहा है। इन महानगर पालिकाओं में सम्बद्ध स्थानों के ग्रामीण क्षेत्रों का विलय किया गया है। इसके जरिये उन क्षेत्रों के नागरिकों को शहरी सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं।

शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग के लिए राज्य सरकार ने दिया 33504 करोड़ रुपए का भारी बजट

गुजरात के शहरों को फ्यूचर रेडी बनाने तथा नागरिकों की सुख-सुविधा के साथ शहरों में ईज ऑफ लिविंग के विजन को साकार करने के लिए राज्य के वर्ष 2026-27 के बजट के अनुसार शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग के लिए 33504 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इस बजट अंतर्गत नागरिक सेवाओं को विश्व स्तरीय बनाने के लिए स्वर्णिम जयंती मुख्यमंत्री शहरी विकास योजनांतर्गत मौजूदा प्रावधान में लगभग 17 प्रतिशत की वृद्धि कर उसे 16116 करोड़ रुपए किया गया है। इसके अलावा; इस वर्ष के शहरी विकास के बजट आगामी कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 के लिए अहमदाबाद तथा अन्य घोषणा की गई है, जिसके म के आयोजन बड़े शहरों में ओलंपिक रेडी सिटी बनाने की हिस्से के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स स्थापित कर उसे आधुनिक सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं के साथ विकसित किया जाएगा। इसके लिए 1278 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही जलापूर्ति, ड्रैनेज व्यवस्था, तालाब विकास तथा परिवहन अवसंरचना के लिए, अहमदाबाद तथा सूरत मेट्रो विस्तार सहित गुजरात मेट्रो रेल प्रोजेक्ट, स्वच्छ भारत मिशन (अर्बन) आदि के लिए शहरी विकास के बजट अंतर्गत प्रावधान किए गए हैं, जो शहरी क्षेत्र के नागरिकों की सुख-सुविधा के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दर्शाते हैं।

उल्लेखनीय है कि राज्य के शहरीकरण तथा आधुनिकीकरण को ध्यान में रखकर वर्ष 2023 में भारत की जी-20 देशों की अध्यक्षता में शहरों के विकास एवं आयोजन संबंधी अर्बन-20 बैठकें केवल गुजरात में ही अहमदाबाद शहर में आयोजित की गई थीं, जहाँ जी-20 देशों के शहरों के प्रतिनिधियों ने इकट्ठा होकर शहरीकरण पर विचार-विमर्श किया था।

गुजरात में हुआ शहरीकरण उसके आर्थिक विकास, औद्योगिक विकास, इन्फ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी तथा राज्य सरकार की पहलों का परिणाम है। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण क्षेत्रों को व्यस्त शहरी केन्द्रों में परिवर्तित किया है और निवेश, व्यवसाय तथा स्थानांतरण करने वालों को आकर्षित किया है। शहरों का विकास राज्य में विभिन्न अवसरों को आकर्षित करता है और इसी कारण शहरी विकास का संचालन तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट सुनिश्चित करना नागरिकों की सुख-सुविधा एवं राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

स्मार्ट मिशन अंतर्गत गुजरात में 6 स्मार्ट सिटी

भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए स्मार्ट सिटी मिशन अंतर्गत गुजरात के 6 शहरों अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, राजकोट, गांधीनगर तथा दाहोद का चयन किया गया था। इन छह शहरों में 11507 करोड़ रुपए से अधिक के 359 प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं, जिनमें से 11277 करोड़ रुपए के 357 प्रोजेक्ट पूरे हुए हैं। 229 करोड़ रुपए के 2 प्रोजेक्ट पूरे होने को हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति में साणंद में 'वीरांजलि डायरो 2.5' कार्यक्रम का भव्य आयोजन

- वीरता, शौर्य और देशभक्ति के स्वरों के साथ अमर शहीदों को दी भावभीनी श्रद्धांजलि
- वीर रस के ज्वार के बीच उपस्थित जनसमूह ने देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी शहादत को वंदन किया

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति में साणंद में 'वीरांजलि डायरो 2.5' कार्यक्रम भव्य और गौरवपूर्ण माहौल में आयोजित हुआ। वीरांजलि समिति और जीटीपीएल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में वीरता, शौर्य और अडिग देशप्रेम के भावों से ओतप्रोत डायरे की प्रस्तुति के माध्यम से राष्ट्र के अमर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस कार्यक्रम में लोकप्रिय कलाकार सांईराम दवे, कीर्तिदान गढ़वी, मायाभाई आहिर, राजभा गढ़वी और अल्पा पटेल सहित कलावृंद ने वीरतापूर्ण बातों, प्रेरणादायक किस्सों और शौर्यगीत की शानदार प्रस्तुति दी। कलाकारों की ओजस्वी वाणी ने देश के वीर शहीदों की गाथाओं को जीवंत बनाकर उपस्थित जनसमूह में देशप्रेम और राष्ट्रीय गौरव का अद्भुत संचार किया।

कार्यक्रम के दौरान शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु सहित अनेक अमर वीर शहीदों की शहादत को याद करके उनकी वीरता और बलिदान को नमन किया गया। देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले इन महान वीरों द्वारा दिए गए बलिदान की गाथाओं ने उपस्थित लोगों में अपार गौरव और प्रेरणा का भाव जागृत किया।

वीरता और शौर्य से ओतप्रोत गीतों, कथाओं और भावविभोर करने वाली रचनाओं के स्वर से समूचा साणंद देशभक्ति के उत्साह से गूंज उठा। वीर रस के ज्वार के बीच उपस्थित जनसमूह ने देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनकी शहादत को वंदन किया। यह कार्यक्रम देशप्रेम, राष्ट्रीय गौरव और शहीदों के बलिदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक स्मरणीय अवसर बन गया।

इस अवसर पर राजस्थान के शहीद प्रतापसिंह जी के प्रपौत्र श्री शत्रुसल्यसिंह जी बारहट, कैबिनेट मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया और डॉ. प्रद्युमन वाजा, राज्य मंत्री सर्वश्री संजयसिंह महिड़ा, कमलेशभाई पटेल, दर्शनाबेन वाघेला, रीवाबा जाडेजा, प्रवीणभाई माली, कौशिकभाई वेकरिया, जयरामभाई गामित, संगठन महामंत्री श्री रत्नाकरजी, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, वीरांजलि समिति के श्री प्रदीपसिंह वाघेला और श्री संजयभाई पटेल, पूर्व मंत्री श्री भूपेंद्रसिंह चूड़ासमा और श्री प्रदीपसिंह जाडेजा, मुळूभाई बेरा और कई विधायकों सहित राज्य के अग्रणी और बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

बेचराजी–रणुज रेल खंड का ब्रॉडगेज कार्य पूर्ण,सीआरएस निरीक्षण हेतु प्रस्ताव प्रेषित,उत्तर गुजरात के विकास को मिलेगी नई गति

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 अगस्त, 2025 को गुजरात दौरे के दौरान 1,400 करोड़ से अधिक लागत की विभिन्न रेलवे परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया था, जिसमें बेचराजी–रणुज रेल खंड भी शामिल था, जिसका ब्रॉडगेज में परिवर्तन कार्य पूर्ण हो चुका है। लगभग 40 किलोमीटर लंबाई एवं 520 करोड़ की लागत से सम्पन्न इस परियोजना के माध्यम से उत्तर गुजरात को सुदृढ़ रेल संपर्क प्रदान किया गया है। यह परियोजना राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति तथा पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के अनुरूप विकसित की गई है, जिससे क्षेत्र में सुरक्षित, तेज एवं निर्बाध आवागमन सुनिश्चित होगा।

बेचराजी–रणुज रेल खंड के अंतर्गत मध्यवर्ती प्रमुख स्टेशनों में खांभेल एवं चाणसमा शामिल हैं, जो महेसाणा एवं पाटण जिलों के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। इस रेल लाइन का ब्रॉडगेज में परिवर्तन पूर्ण हो चुका है तथा यात्री रेल सेवाएं प्रारंभ होने पर इन क्षेत्रों के ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी इलाकों को सीधा लाभ प्राप्त होगा। विशेष रूप से स्थानीय निवासियों, विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों तथा छोटे व्यापारियों के लिए आवागमन अधिक सुगम, तेज एवं किफायती हो जाएगा।

देश के विभिन्न क्षेत्रों से बेचराजी मंदिर एवं वहां आयोजित मेला में दर्शन हेतु आने वाले श्रद्धालु इस रेल सुविधा से विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।

यह परियोजना क्षेत्र के कृषि एवं लघु उद्योगों के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी। किसानों को अपने उत्पादों को बड़े बाजारों तक पहुंचाने में सुविधा मिलेगी, वहीं व्यापारिक गतिविधियों को भी नई गति प्राप्त होगी। साथ ही, यह रेल खंड क्षेत्रीय आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करते हुए रोजगार के अवसरों में वृद्धि में सहायक होगा। मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने की दिशा में यह परियोजना एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना एवं राज्य की लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स में सुधार लाना है।

मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश ने बताया कि इस खंड पर अब तक मालगाड़ियों का संचालन किया जा रहा था। अब यात्री रेल सेवाएं प्रारंभ करने के उद्देश्य से बेचराजी–रणुज रेल खंड का ब्रॉडगेज कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है तथा सीआरएस (Commissioner of Railway Safety) निरीक्षण के लिए प्रस्ताव भेजा जा चुका है। उन्होंने कहा कि निरीक्षण पूर्ण होने के पश्चात इस खंड पर यात्री रेल सेवाओं का संचालन प्रारंभ किया जाएगा, जिससे क्षेत्र के यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं समयबद्ध यात्रा सुविधा प्राप्त होगी।

इस संबंध में मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश की अध्यक्षता में मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में Director G-RIDE श्री राजकुमार, जीएम (सिविल) श्री शिवेन्द्र कुमार, अपर मण्डल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) श्रीमती मंजू मीणा, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अन्नू त्यागी, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक डॉ. जेनिया गुप्ता तथा वरिष्ठ मंडल अभियंता (समन्वय) श्री वैभव सकलेचा उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान महेसाणा लोकसभा क्षेत्र के माननीय सांसद श्री हरिभाई पटेल के साथ दूरभाष पर विस्तृत चर्चा की गई, जिसमें उन्हें बेचराजी–रणुज रेल खंड के सीआरएस निरीक्षण हेतु प्रेषित प्रस्ताव, वर्तमान प्रगति एवं आगामी यात्री सेवाओं के संचालन से संबंधित जानकारी से अवगत कराया गया। साथ ही, इस रेल खंड के विद्युतीकरण (Electrification) के लिए भी स्वीकृति प्रदान किए जाने की जानकारी दी गई, जिससे भविष्य में इस मार्ग पर और अधिक तेज, पर्यावरण-अनुकूल एवं ऊर्जा दक्ष रेल संचालन सुनिश्चित हो सकेगा।

अहमदाबाद मंडल द्वारा इस परियोजना को उच्च गुणवत्ता मानकों एवं निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूर्ण किया गया है। यह पहल भारतीय रेलवे की यात्री-केंद्रित, आधुनिक एवं विकासोन्मुख कार्यप्रणाली को दर्शाती है। इस रेल खंड के प्रारंभ होने से क्षेत्रीय कनेक्टिविटी सुदृढ़ होगी तथा उत्तर गुजरात के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को नई दिशा मिलेगी।

सूरत: एवेंटिस डेवलपर्स की परियोजनाओं में बुकिंग कराने वालों के पैसों की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। वर्ष 2002 में, सरकार ने कई वित्तीय कंपनियों, बैंकों आदि को दिए गए ऋण की वसूली के लिए प्रतिभूति हित अधिनियम (समर्पण अधिनियम 2002) को मंजूरी दी। इस मंजूरी के आधार पर, कभी-कभी बैंक या वित्तीय कंपनियां संपत्तियों के संबंध में बहुत गलत निर्णय ले लेती हैं, जिससे ऋण लेने वाले व्यक्ति को नुकसान होता है। लेकिन कुछ मामलों में, ऋण लेने वाले को लाभ भी मिलता है। ऐसे लाभ उदाहरण के तौर पर, एक निजी बिल्डर किसी भूस्वामी से कुछ पैसे देकर और उससे दस्तावेज लेकर निजी जमीन खरीद लेता है। यदि उनके साथ कोई परियोजना शुरू की जाती है, तो उन दस्तावेजों में कोई समस्या नहीं होती, जिनके बारे में भूस्वामी को कोई जानकारी नहीं होती। इन दस्तावेजों के आधार पर बिल्डर अपने प्लान को मंजूरी दिलवा लेते हैं। और ऐसे प्लान को मंजूरी मिलने के बाद, विज्ञापन बोर्ड लगाए जाते हैं और बुकिंग की जाती है। और ऐसी बुकिंग के आधार पर, बुकिंग करने वाले व्यक्ति से 30% से 40% राशि ली जाती है।

इसके बाद, परियोजना के लिए बैंकों से बड़ा ऋण लिया जाता है। और इस ऋण के आधार पर एक ढांचा तैयार किया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, मेसर्स अवंतिस ड्रीम्स होम्स एलएलपी की सिएस्टा परियोजना, वेसु रोड, सूरत और मेसर्स अवंतिस डेवलपर्स एलएलपी की प्लॉट संख्या 83, सर्वे संख्या 71/2, ब्लॉक संख्या 75/बी, टीपी एस संख्या 19, पर्वत मागोब क्षेत्र 6130 वर्ग मीटर, ग्राम पर्वत, जिला सूरत में गिरवी रखी गई परियोजना के साझेदार शंकरलाल छगनलाल शाह, वायरल शंकरलाल शाह, अंकित शंकरलाल शाह आदि ने एसबीआई बैंक, माजुरा गेट, सूरत से मूल्यवान जमीनें दिखाकर उन पर योजना बनाई और

करोड़ों रुपये का ऋण लिया। इनमें से, बैंक ने सरफसाई अधिनियम के तहत 17,67,50,319 रुपये के बकाया के लिए मामला दर्ज किया है और इसी अधिनियम के तहत संपत्ति जब्त कर ली है। फिलहाल यह तय नहीं है कि इस संपत्ति की नीलामी कब होगी। लेकिन अब सवाल यह उठता है कि क्या बैंक अपना पैसा वसूलने के लिए संपत्ति बेचेगा? लेकिन उस संपत्ति का क्या होगा जिसमें कई लोगों ने एक-एक रुपये की किस्त देकर बुकिंग कराई है? क्योंकि बुकिंग कराने वाले लोगों ने पैसे रोक रखे हैं और उनके पास कोई कानूनी सबूत नहीं है। आम तौर पर यह माना जाता है कि वे अपना पैसा वापस पाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं कर सकते और इसी वजह से वे अदालत या पुलिस में शिकायत करने से हिचकिचा रहे हैं। सूरत शहर में, मेसर्स अवंतिस ड्रीम्स होम्स एलएलपी, सिएस्टा प्रोजेक्ट, वेसु रोड, सूरत और मेसर्स अवंतिस डेवलपर्स एलएलपी, प्लॉट नंबर 83, वेसु, सूरत में गिरवी रखी गई संपत्ति, प्लॉट नंबर 83, सर्वे नंबर 71/2, ब्लॉक नंबर 75/बी, टीपी सर्वे नंबर 19, पर्वत मागोब, क्षेत्रफल 6130 वर्ग मीटर, ग्राम पर्वत, जिला सूरत, मेसर्स अवंतिस डेवलपर्स एलएलपी के नाम पर है। यह संपत्ति पहले अवंतिस डेवलपर्स पार्टनरशिप फर्म के नाम से जानी जाती थी। इस प्रकार, बुकिंग कराने वाले शंकरलाल छगनलाल शाह, अंकित शंकरलाल शाह और वायरल शंकरलाल शाह ने बुकिंग कराने वालों को जानबूझकर धोखा दिया है। सरकार को ऐसी संपत्तियों की बिक्री या नीलामी रोकनी चाहिए।

इन बुकिंगों में शामिल लोगों ने अपने द्वारा दर्ज किए गए नोटों या डायरियों के आधार पर लाखों रुपये का निवेश किया है। सरकार को उनकी शिकायतें सुननी चाहिए और उन्हें न्याय दिलाना चाहिए। बिल्डरों द्वारा हस्ताक्षरित नोटों या डायरियों की हस्तलेख विशेषज्ञ द्वारा जांच की जानी चाहिए। और ऐसे हस्तलेख विशेषज्ञ की राय के आधार पर, बिल्डरों के खिलाफ मामला दर्ज किया जाना चाहिए और कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए। ऐसे निवेशकों को उनके मामलों की सुनवाई के बाद न्याय मिलना चाहिए। सर्विलांस अधिनियम के तहत जिन संपत्तियों को कुर्क किया जाना है, उन्हें कुर्क करने से पहले सार्वजनिक सूचना जारी की जानी चाहिए कि क्या उनमें किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कोई निवेश किया गया है।

सूरत नगर निगम: अहमदाबाद में नौकरी के लिए साक्षात्कार आयोजित करने के विरोध में युवाओं का प्रदर्शन

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

सूरत नगर निगम ने वर्ष 2018, 2019, 2021 और 2023 में विभिन्न पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए थे। इसके चलते कई उम्मीदवार नौकरी पाने का सपना देख रहे थे। उस समय सूरत नगर निगम में आठ वर्षों तक भर्ती की कोई अंतिम तिथि घोषित नहीं की गई थी। कई युवाओं ने नौकरी की उम्मीद छोड़ दी थी, तभी अचानक सूरत नगर निगम के अधिकारियों और निर्वाचित पार्षदों ने घर बैठे ही उम्मीदवारों के साक्षात्कार की घोषणा कर दी। लेकिन क्या नगर निगम के अधिकारी निर्वाचित पार्षदों के घर जाने का इंतजार कर रहे थे? साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) के लिए कोई पत्र नहीं भेजा गया। उम्मीदवारों को व्हाट्सएप पर सूचना दी गई। जिन उम्मीदवारों के मोबाइल नंबर बदल चुके थे, वे साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) की सूचना मिलते ही सूरत नगर निगम के तापीपुरा स्थित श्री तापीभभन कार्यालय की ओर दौड़ पड़े।

सूरत नगर निगम का साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) अहमदाबाद में आयोजित किया गया। फॉर्म भरने वाले उम्मीदवार अधिकतर सूरत और सूरत जिले के हैं। ऐसे उम्मीदवारों को आने-जाने में काफी परेशानी हो रही है। साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) का समय सुबह 10:00 बजे है, इसलिए आपको सुबह जल्दी उपस्थित होना होगा। क्या सूरत नगर निगम के पास उपकरणों और सामग्रियों की कमी है? वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, एसवीएनआईटी कॉलेज, गांधी कॉलेज, स्मैमर कॉलेज, एमटीबी कैंपस, भगवान महावीर विश्वविद्यालय जैसे बड़े संस्थानों की इमारतें तो वहीं हैं। फिर उम्मीदवारों को अहमदाबाद तक इंतजार क्यों कराया गया? कई उम्मीदवार यह सवाल पूछ रहे हैं कि सूरत नगर निगम ने साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) अहमदाबाद में क्यों आयोजित किया? क्या सूरत नगर निगम के अधिकारी परीक्षा लेने में सक्षम नहीं हैं?

यदि राज्य सरकार तलाटी, सीसीई और अन्य विज्ञापनों के लिए सूरत में साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) आयोजित करती है, तो सूरत नगर निगम अहमदाबाद में साक्षात्कार (लिखित परीक्षा) आयोजित करके क्या साबित करना चाहता है?

गुजरात उच्च न्यायालय: बैंक नीलाम की गई संपत्ति की बिक्री विलेख के पंजीकरण को नहीं रोक सकता

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात उच्च न्यायालय ने बैंक नीलामी के माध्यम से खरीदी गई संपत्तियों के मामले में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। इस संबंध में, उच्च न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि किसी व्यक्ति ने बैंक की कानूनी नीलामी प्रक्रिया के माध्यम से संपत्ति खरीदी है, तो संबंधित सरकारी अधिकारी या पंजीकरण अधिकारी उसके विक्रय दस्तावेज या विक्रय प्रमाण पत्र को पंजीकृत करने से इनकार नहीं कर सकते। इस संबंध में, माननीय न्यायालय ने आगे स्पष्ट किया है कि यदि ऐसी संपत्ति पर वैट विभाग या कोई अन्य सरकारी बकाया है, तब भी अधिकारियों के लिए बैंक द्वारा जारी विक्रय प्रमाण पत्र को पंजीकृत करना अनिवार्य है। न्यायमूर्ति हेमंत एम. प्रच्छक की अदालत ने भावनगर में संपत्ति विवाद के मामले में यह फैसला सुनाया।

मामले के विवरण के अनुसार, "मेसर्स राज पिक्चर हाउस" के स्वामित्व वाली एक संपत्ति को वर्ष 2013 में बैंक ऑफ बड़ौदा के पास गिरवी रखा गया था। जब मूल मालिक ऋण चुकाने में विफल रहा, तो बैंक ने SARFAESI अधिनियम के तहत वसूली की कार्यवाही शुरू की और संपत्ति की सार्वजनिक नीलामी आयोजित की। इस नीलामी में, आवेदक त्रिशाली वैभव शाह ने सफलतापूर्वक बोली लगाई और अक्टूबर 2023 में 1.96 करोड़ रुपये का बिक्री प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

हालांकि, जब खरीदार संपत्ति के दस्तावेज (हस्तांतरण विलेख) को पंजीकृत कराने के लिए उप-पंजीयक कार्यालय पहुंचा, तो अधिकारियों ने इसे पंजीकृत करने से साफ इनकार कर दिया। प्रशासन ने तर्क दिया कि वैट विभाग ने 2016 में संपत्ति को जब्त करने का आदेश दिया था और सरकारी बाधाओं के कारण इसे पंजीकृत नहीं किया जा सका। याचिकाकर्ता ने इस फैसले के खिलाफ उच्च न्यायालय में अपील की।

याचिकाकर्ता के वकील ने अदालत में दलील दी कि SARFAESI अधिनियम के तहत सुरक्षित वित्तीय संस्थानों के दावों को प्राथमिकता दी जाती है और पंजीकरण अधिकारी कानूनी नीलामी प्रक्रिया में बाधा नहीं डाल सकते। माननीय उच्च न्यायालय ने इन दलीलों को स्वीकार करते हुए कहा कि पंजीकरण अधिकारियों ने अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर काम किया है। न्यायालय ने अधिकारियों के इनकार को खारिज करते हुए आदेश को रद्द कर दिया और बैंक तथा याचिकाकर्ता के बीच विक्रय विलेख के पंजीकरण की प्रक्रिया को तत्काल पूरा करने का आदेश दिया। इस फैसले से राज्य भर में बैंक नीलामी के माध्यम से संपत्ति खरीदने वाले सैकड़ों लोगों के लिए एक बड़ा रास्ता खुल गया है। अब से पंजीकरण अधिकारी पुराने बकाया या सरकारी विभागों के बोझ का बहाना बनाकर वैध खरीदारों को परेशान नहीं कर पाएंगे। इसे संपत्ति बाजार और बैंकिंग क्षेत्र के लिए राहत भरी खबर माना जा रहा है।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित,साहित्यकार महादेवी वर्मा जयंती पर साहित्यिक आयोजन एवं हिंदी जागरूकता कार्यक्रम

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में दिनांक 25.03.2026 को मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का गरिमामय आयोजन किया गया।

बैठक से पूर्व हिंदी साहित्यकार महादेवी वर्मा जी की जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय द्वारा महादेवी वर्मा जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया गया। राजभाषा विभाग द्वारा महादेवी वर्मा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एक प्रभावपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी गई, जिसके उपरांत हिंदी प्रश्न मंच

का आयोजन किया गया, सही उत्तर देनेवाले प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अहमदाबाद मंडल की होली विशेषांक ई-पत्रिका "राजभाषा आश्रम सौरभ" के 54वें अंक का विमोचन भी किया गया, जो मंडल में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

बैठक के दौरान मंडल में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 02 अधिकारियों एवं 06 कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक महोदय की विशेष पुरस्कार योजना "राजभाषा रत्न" के अंतर्गत प्रशस्ति-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बैठक में राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु नवीन पहल के रूप में यह निर्णय लिया गया कि रेलगाड़ियों में QR कोड उपलब्ध कराए जाएंगे, जिनके माध्यम से यात्री हिंदी की विविध पुस्तकों का अध्ययन कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर हिंदी पुस्तकालय स्थापित करने की योजना भी प्रस्तावित की गई, जिससे यात्रियों एवं आमजन में हिंदी पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा मिल सके।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की कि वे निर्धारित लक्ष्यों से आगे बढ़कर राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य सुनिश्चित करें तथा शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रभावी एवं व्यापक बनाएं।

उक्त बैठक में अपर मंडल राजभाषा अधिकारी श्रीमती मंजू मीणा, राजभाषा अधिकारी (प्रभारी) श्री हाफिज अली खान सहित मंडल के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से विभिन्न स्पेशल ट्रेनों के फेरों को विस्तारित किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 09049/09050 दादर – भुसावल साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09049 दादर – भुसावल स्पेशल को 31 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09050 भुसावल – दादर स्पेशल को भी 31 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
2. ट्रेन संख्या 09051/09052 दादर – भुसावल त्रि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09051 दादर – भुसावल स्पेशल को 29 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09052 भुसावल – दादर स्पेशल को भी 29 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
3. ट्रेन संख्या 09057/09058 सूरत – मंगलुरु द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09057 सूरत – मंगलुरु स्पेशल को 31 मई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09058 मंगलुरु – सूरत स्पेशल को 01 जून, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
4. ट्रेन संख्या 09111/09112 वडोदरा – गोरखपुर साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09111 वडोदरा – गोरखपुर स्पेशल को 27 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09112 गोरखपुर – वडोदरा स्पेशल को 29 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
5. ट्रेन संख्या 09195/09196 वडोदरा – मऊ साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09195 वडोदरा – मऊ स्पेशल को 25 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09196 मऊ – वडोदरा स्पेशल को 26 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
6. ट्रेन संख्या 09424/09423 अहमदाबाद – मंगलुरु साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09424 अहमदाबाद – मंगलुरु स्पेशल को 29 मई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09423 मंगलुरु – अहमदाबाद स्पेशल को 30 मई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
7. ट्रेन संख्या 09324/09323 इंदौर – खड़की साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09324 इंदौर – खड़की स्पेशल को 29 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 09323 खड़की – इंदौर स्पेशल को 30 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

अहमदाबाद मंडल: स्टेशनों एवं ट्रेनों पर व्यापक सघन टिकट जांच अभियान,7 दिनों में 7943 प्रकरण दर्ज, 56.53 लाख से अधिक राजस्व अर्जित

यात्रियों को सुरक्षित, पारदर्शी एवं नियमबद्ध यात्रा सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा दिनांक 18 मार्च 2026 से 31 मार्च 2026 तक एक विशेष, बहु-स्तरीय सघन टिकट जांच अभियान सुव्यवस्थित रूप से संचालित किया जा रहा है। यह अभियान मंडल के प्रमुख एवं उप-प्रमुख स्टेशनों के साथ-साथ मेल/एक्सप्रेस, पैसेंजर एवं उपनगरीय ट्रेनों में समन्वित एवं निरंतर रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है।

उक्त अभियान के अंतर्गत दिनांक 18.03.2026 से 24.03.2026 तक की अवधि में व्यापक जांच के परिणामस्वरूप कुल 7943 प्रकरण दर्ज किए गए, जिनसे 56.53 लाख से अधिक का राजस्व अर्जित हुआ। यह उपलब्धि मंडल की प्रभावी निगरानी प्रणाली, सतत प्रवर्तन कार्रवाई तथा राजस्व संरक्षण के प्रति

प्रतिबद्धता को परिलक्षित करती है।

अभियान के दौरान बिना बुक किए गए सामान (Unbooked Luggage - UBL) से संबंधित 35 प्रकरण भी दर्ज किए गए। इसके अतिरिक्त, रेलवे अधिनियम की धारा 198 के अंतर्गत 147 प्रकरणों में कार्रवाई करते हुए 27,610 का जुर्माना वसूला गया।

यह विशेष अभियान मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश के कुशल निर्देशन एवं सतत पर्यवेक्षण में संचालित किया जा रहा है, जबकि वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, अहमदाबाद श्री अन्नु त्यागी के मार्गदर्शन में वाणिज्य विभाग की टीमों द्वारा विभिन्न स्थानों पर योजनाबद्ध एवं लक्षित जांच कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है।

अभियान के अंतर्गत टिकट जांच स्टाफ द्वारा स्टेशनों, प्रमुख ट्रेनों, प्लेटफार्म परिसरों एवं संवेदनशील खंडों में विशेष निगरानी रखते हुए बिना टिकट यात्रा, अनियमित यात्रा तथा नियम उल्लंघन के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जा रही है।

रेल प्रशासन यात्रियों से पुनः अपील करता है कि वे वैध एवं अधिकृत माध्यमों से टिकट प्राप्त कर ही यात्रा करें तथा रेलवे अधिनियम के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करें। किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर नियमानुसार दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

अहमदाबाद मंडल द्वारा इस प्रकार के विशेष प्रवर्तन अभियानों को भविष्य में भी निरंतर एवं अधिक सघन रूप से संचालित किया जाता रहेगा, जिससे राजस्व संरक्षण, सेवा गुणवत्ता में सुधार तथा यात्रियों के लिए सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित यात्रा वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

अहमदाबाद मंडल में नागरिक सुरक्षा विंग द्वारा "Annual Day Celebration" का आयोजन

अहमदाबाद मंडल के नागरिक सुरक्षा विंग द्वारा दिनांक 20.03.2026 को गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन परिसर में "Civil Defence Annual Day" का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आपदा प्रबंधन एवं आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों के कौशल का प्रदर्शन करना था।

कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी एवं मंडल नागरिक सुरक्षा अधिकारी श्री उमेश प्रसाद द्वारा नागरिक सुरक्षा दल की परेड का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के उपरांत स्वयंसेवकों ने विभिन्न आपातकालीन बचाव कार्यों का

प्रभावी प्रदर्शन प्रस्तुत किया, जिसमें शामिल थे—

- इमर्जेंसी रेस्क्यू विधि के माध्यम से विभिन्न स्थानों से घायलों (कैजुअल्टी) को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाना।
- टू पैरेलल सस्पेंशन विधि द्वारा स्ट्रेचर के माध्यम से घायल व्यक्ति को ऊँचाई से सुरक्षित नीचे उतारना।
- चेयर नॉट तकनीक के माध्यम से घायल व्यक्ति को ऊँचाई से सुरक्षित नीचे लाना।
- फायर एक्सटिंग्विशर का उपयोग कर आग पर त्वरित नियंत्रण प्राप्त करना।

इस अवसर पर नागरिक सुरक्षा संगठन, गांधीनगर के प्रभारी एवं वार्डन, ADSO-अहमदाबाद, IPF/RPF गांधीनगर सहित रेलवे के विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं पर्यवेक्षक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के समापन पर वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी एवं मंडल नागरिक सुरक्षा अधिकारी द्वारा विशिष्ट अतिथियों एवं प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह (Memento) प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अहमदाबाद मंडल द्वारा इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से आपदा प्रबंधन क्षमता को सुदृढ़ करने एवं रेलवे परिसर में सुरक्षा एवं सजगता को बढ़ावा देने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

सोना वायदा में 5883 रुपये और चांदी वायदा में 12487 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 521 रुपये फिसला

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 232338.31 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 34217.57 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 198120.31 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 35360 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2940.41 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 25329.71 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 143079 रुपये के भाव पर खूलकर, 144799 रुपये के दिन के उच्च और 143079 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 138912 रुपये के पिछले बंद के सामने 5883 रुपये या 4.24 फीसदी की तेजी के संग 144795 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-गिनी मार्च वायदा 3741 रुपये या 3.29 फीसदी की तेजी के संग 117297 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-पेटल मार्च वायदा 540 रुपये या 3.8 फीसदी की तेजी के संग 14742 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर पहुंचा। सोना-मिनी अप्रैल वायदा 143010 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 144855 रुपये और नीचे में 142510 रुपये पर पहुंचकर, 5693 रुपये या 4.09 फीसदी की तेजी के संग 144800 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-टेन मार्च वायदा प्रति 10 ग्राम 139999 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 146400 रुपये और नीचे में 139999 रुपये पर पहुंचकर, 139311 रुपये के पिछले बंद के सामने 5614 रुपये या 4.03 फीसदी की तेजी के संग 144925 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा सत्र के आरंभ में 232898 रुपये के भाव पर खूलकर, 237350 रुपये के दिन के उच्च और 232898 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 223941 रुपये के पिछले बंद के सामने 12487 रुपये या 5.58 फीसदी की तेजी के संग 236428 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 12007 रुपये या 5.26 फीसदी की मजबूती के साथ 240098 रुपये प्रति किलो बोला गया।

▶▶ कमोडिटी वायदाओं में 34217.57 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 198120.31 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 25329.71 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 35360 पॉइंट के स्तर पर

जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 11990 रुपये या 5.25 फीसदी की तेजी के संग 240201 रुपये प्रति किलो हुआ। मेटल वर्ग में 3333.69 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मार्च वायदा 16.75 रुपये या 1.5 फीसदी की तेजी के संग 1136.1 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता मार्च वायदा 1.75 रुपये या 0.57 फीसदी बढ़कर 310.35 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम मार्च वायदा 2.5 रुपये या 0.75 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 334.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मार्च वायदा 65 पैसे या 0.35 फीसदी चढ़कर 189 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 5203.59 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 8530 रुपये के भाव पर खूलकर, 8530 रुपये के दिन के उच्च और 8175 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 521 रुपये या 5.96 फीसदी गिरकर 8215 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 515 रुपये या 5.89 फीसदी की गिरावट के साथ 8222 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा 271.1 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 274.6 रुपये और नीचे में 269.8 रुपये पर पहुंचकर, 277.6 रुपये के पिछले बंद के सामने 6.2 रुपये या 2.23 फीसदी घटकर 271.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा 6.1 रुपये या 2.2 फीसदी गिरकर 271.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 1002.1 रुपये के भाव पर खूलकर, 60 पैसे या 0.06 फीसदी की नरमी के साथ 991.6 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 17928.21 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 7401.50 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2780.89 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 274.03 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 20.59 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 258.18 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 3976.85 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1195.29 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8363 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 57243 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 28298 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 366286 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 64772 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7023 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19558 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 72226 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 19459 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 27188 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 35131 पॉइंट पर खूलकर, 35473 के उच्च और 35131 के नीचले स्तर को छूकर, 1252 पॉइंट बढ़कर 35360 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 158.2 रुपये की गिरावट के साथ 280.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.15 रुपये की गिरावट के साथ 21.45 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 2065 रुपये की बढ़त के साथ 5314.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 280000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 12 रुपये की गिरावट के साथ 61.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3.84 रुपये की बढ़त के साथ 20.12 रुपये हुआ। जस्ता मई 342.5 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.1 रुपये की गिरावट के साथ 0.74 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 7000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 83.4 रुपये की बढ़त के साथ 267 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.35 रुपये की बढ़त के साथ 21.7 रुपये हुआ। सोना अप्रैल 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 2435 रुपये की गिरावट के साथ 3219 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 230000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 7329 रुपये की गिरावट के साथ 2100 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 7.69 रुपये की गिरावट के साथ 17.81 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 3 पैसे के सुधार के साथ 1.5 रुपये हुआ।